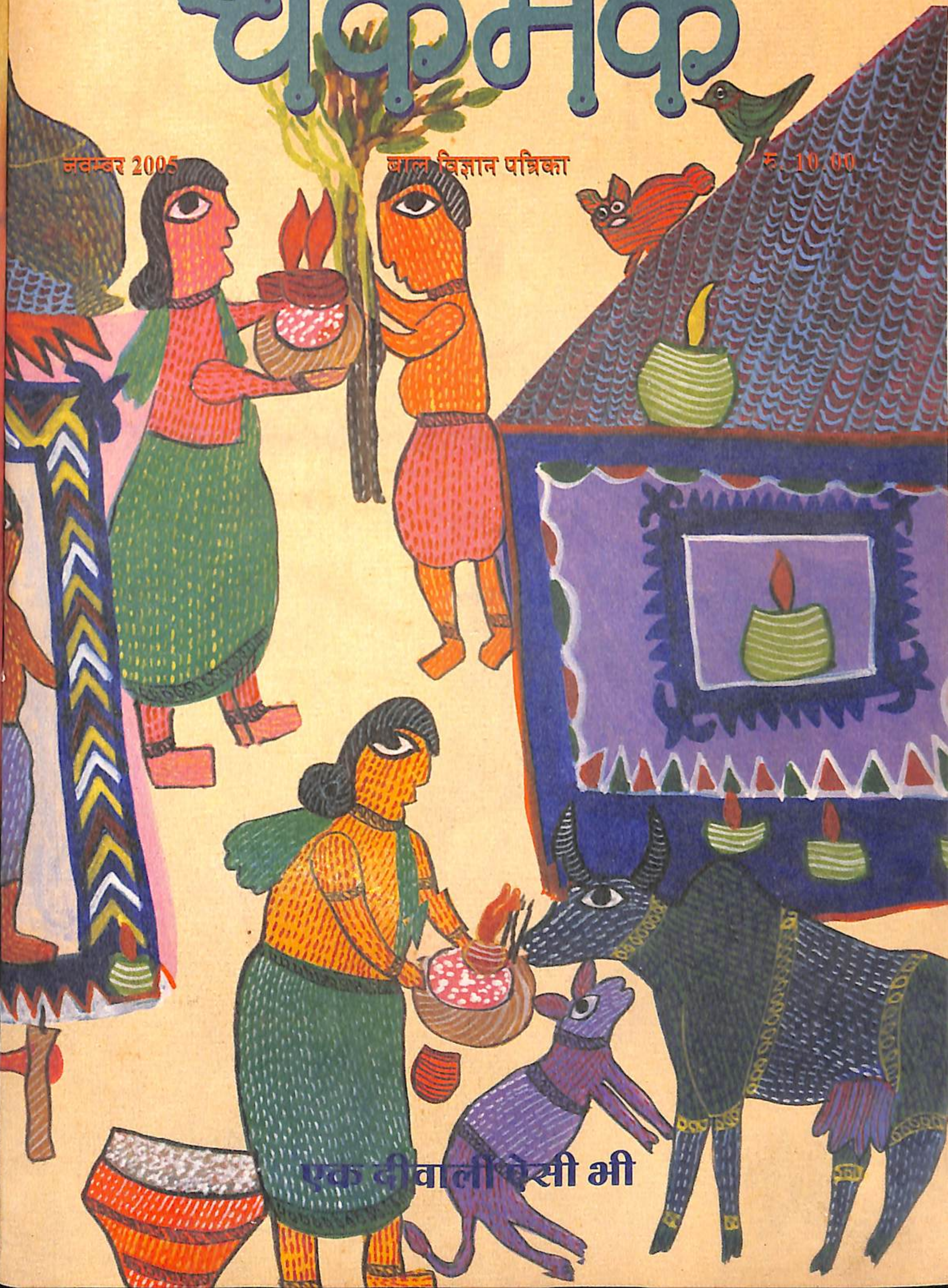
चकमक

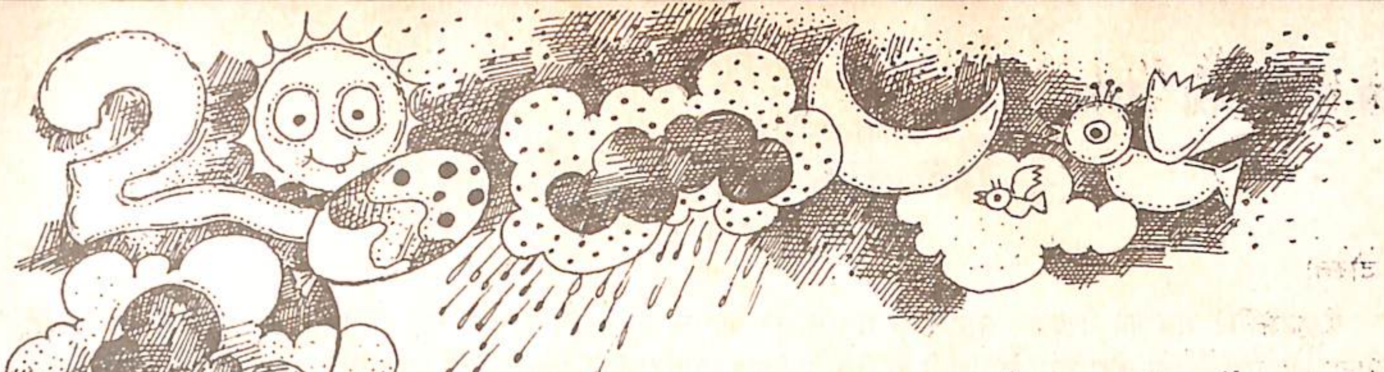
नवम्बर 2005 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 10.00



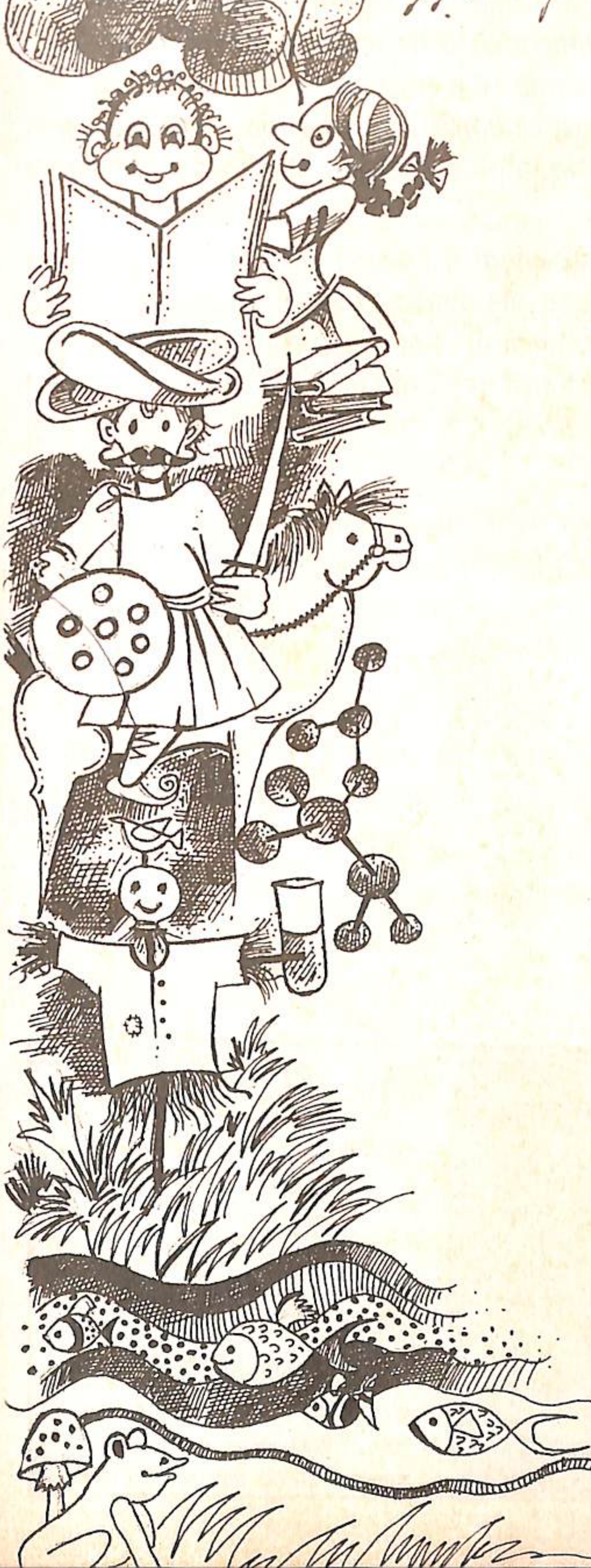
एक दीवाली ऐसी भी



दीपकर दीप, 4 वर्ष, भोपाल, म.प्र.



क्या-क्या है इस अंक में



आवरण - लोक में दीवाली - दुर्गाबाई

इस बार की बात...

ज़्यादा गहरी है
समुद्र से
समुद्र को जानने की इच्छा

दोस्तो,

पेड़ से गिरे सेब को देखकर न्यूटन के मन में यह जानने की इच्छा यदि न हुई होती कि सेब ज़मीन पर ही क्यूँ गिरा, आकाश में क्यूँ नहीं गया तो पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण (पॉवर ऑफ ग्रेविटी) की खोज न जाने कब हुई होती! खोजों और आविष्कारों के पीछे मनुष्य की अपने आसपास को, अपने ब्रह्माण्ड को जानने की इच्छा छुपी हुई है। यह जानने की इच्छा ही मारी क्यूरी को अनेक कठिनाइयों के बावजूद रेडियम की खोज के लिए प्रेरित करती रही। वे एक नहीं, दो बार नोबल पुरस्कार के लिए चुनी गईं। 7 नवम्बर को मारी क्यूरी का जन्मदिन है। उन पर एक विशेष लेख चट्टान से मिलते संकेत प्रकाशित है। नवम्बर कई वैज्ञानिकों के जन्म का महीना है। पता लगाओ इस महीने में और किन वैज्ञानिकों का जन्म हुआ है? उन्होंने क्या खोजें की?

चाँद के बारे में जानने-लिखने की इच्छा हमारे वैज्ञानिकों और कवियों में हमेशा से रही है। नवम्बर में आनेवाले त्यौहार ईद और दीवाली दोनों का चाँद से एक खास रिश्ता है। ईद और दीवाली पर हम दो लेख प्रकाशित कर रहे हैं। 'ईद' लेख में चाँद के महीनों का कैलण्डर भी है। 'एक दीवाली ऐसी भी' लेख में तुम पाओगे कि होशंगाबाद ज़िले के शाहपुर में सब मिलकर एक अलग तरह की दीवाली मनाते हैं जिसमें पटाखे नहीं फोड़े जाते। हम चाहें तो दीवाली कई तरह से मना सकते हैं। हमारे इन त्यौहारों का हमारी खेती-किसानी से भी सम्बन्ध है। क्या तुमने इस बारे में कभी सोचा है?

10 नवम्बर को आने वाले अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर भौतिक शास्त्री वन्दना सिंह का लेख 'ये चाँद का रोशन चेहरा' प्रकाशित है। शमशेर बहादुर सिंह की एक कविता 'चाँद से थोड़ी-सी गप्पें' भी इस अंक में है।

पुस्तक अंश में चित्रकार और लेखक श्री अमृतलाल वेगड़ की पुस्तक 'सौन्दर्य की नदी नर्मदा' के कुछ अंश दे रहे हैं। इनसे तुम्हें नर्मदा के असीम सौन्दर्य का एहसास होगा। क्या नर्मदा नदी पर बनाए जा रहे बड़े-बड़े बाँध उसके सौन्दर्य को खत्म नहीं कर रहे?

हमारे आग्रह पर छत्तीसगढ़ी चित्रकार दुर्गाबाई ने चकमक का आवरण चित्र बनाया है। इस चित्र में गौंड परधानों की दीवाली दिख रही है। तुमने ईद और दीवाली पर क्या-क्या किया, क्या-क्या देखा, हमें लिखकर या चित्र बनाकर ज़रूर भेजना। हम इन्तज़ार करेंगे।

दीवाली और ईद मुबारक!

तुम्हारी
संगीता

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 21, अंक-4, नवम्बर 2005

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोना
स्वयं प्रकाश
सुशील शुक्ल
संगीता गुंदेचा

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

सज्जा
राकेश खत्री

वितरण
कमल सिंह
अनिल लोखण्डे
मनोज निगम

सहयोग
शिवनारायण गौर

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/एचआईजी-453,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फोन - 2463380
eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ - यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति	:	10.00 रुपए
छमाही	:	50.00 रुपए
वार्षिक	:	100.00 रुपए
दो साल	:	180.00 रुपए
आजीवन	:	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चैक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चैक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

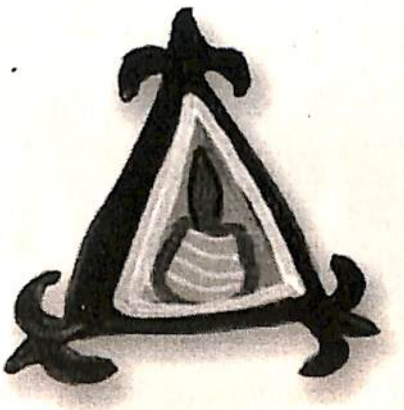
एक दीवाली ऐसी भी...

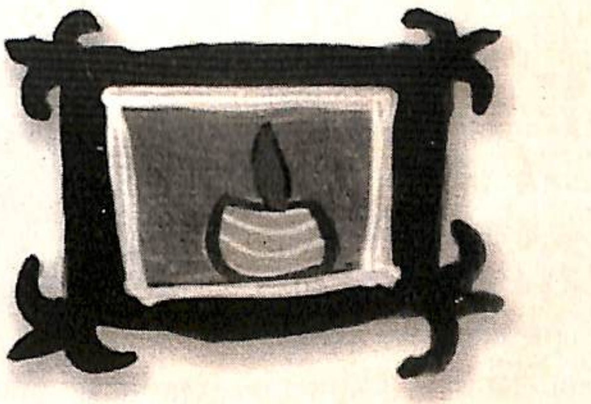
घनश्याम तिवारी

दीवाली! इस एक नाम में दुनिया भर की चीज़ें शामिल हैं। कितने धूमधड़ाके, मिठाइयाँ, रोशनी! पूरे एक महीने पहले से लोग दीवाली की तैयारियाँ शुरू कर देते हैं। घरों के कोने-कोने की सफाई होती है। इस सफाई में साल भर की गुमी हुई कितनी ही चीज़ें मिलती हैं। बाज़ार सज जाते हैं। लोग बड़ी मात्रा में घरेलू उपयोग के सामान, पटाखे, मिठाइयाँ खरीदते हैं। और फिर अमावस्या की रात दिवाली मनाते हैं।

अगर तुम्हें पूरे एक महीने दीवाली मनाने का मौका मिले, वो भी पूरी मस्ती, धूमधड़ाके और गाजे-बाजे के साथ, पूरा का पूरा गाँव या शहर उसमें शामिल हो, सब नाचें-गाएँ, और हाँ, दिवाली में तुम्हें ढेर सारे पैसे भी न खर्च करने पड़ें, तो कैसा रहे...?

जनाब हम कोई तुक्का नहीं मार रहे हैं। हमारे देश में कई जगह दीवाली बिल्कुल इसी तरह मनाई जाती है। इस दीवाली की एक झलक तुम्हें इस लेख में मिलेगी। औऱ हाँ, अगर तुम इसमें शामिल होना चाहते हो तो तुम्हें मध्यप्रदेश के बैतूल जिले के शाहपुर विकासखण्ड के किसी गाँव आना होगा बस। शाहपुर एक आदिवासी बहुल इलाका है। पर इसका मतलब यह नहीं कि हम किसी आदिवासी दीवाली की बात कर रहे हैं। वो इसलिए क्योंकि इस दीवाली में जैसा कि हम पहले भी कह चुके हैं, सिर्फ आदिवासी ही शामिल नहीं होते। यह तो पूरे गाँव की दीवाली होती है। चाहे वो किसी भी जाति का हो। किसी भी धर्म में यकीन रखता हो। इस दीवाली के बारे में मैंने कई बुजुर्गों से बात की।





दीवाली की शुरूआत यहाँ पंद्रह दिन पहले से हो जाती है। दीवार पर तरह-तरह की डिज़ाइन, पशु-पक्षियों के चित्र बनाए जाते हैं। फिर बाज़ार से सामान लाते हैं। जानोगे इस सामान में क्या-क्या होता है? चटख रंग, गेरू (लाल रंग की मिट्टी), नाथ, मुछैड़ी, मुरंगा (मोर पंख) कंठीला (कौड़ियों से बनी माला)! ये सब वे चीज़ें हैं जिनसे बैलों, गायों, बछड़ों को सजाया जाता है। इसके अलावा किराने का सामान, पटाखे, फुलझड़ी भी होती हैं।

इस दीवाली की सबसे लुभावनी चीज़ है गाँव के सब लोगों का एक साथ दीवाली मनाना। दे धमाल और मौज-मस्ती! शाहपुर ब्लॉक के सभी गाँवों में दीवाली एक साथ शुरू होती हो ऐसा नहीं है। अलग-अलग गाँवों में दीवाली अलग-अलग तिथियों में मनाई जाती है। यह तिथि पहले से तय हो जाती है। कुछ गाँव दूज को दीवाली मनाते हैं तो कुछ पंचमी या ग्यारस को। दीवाली पर लोग अपने रिश्तेदारों को न्यौता देते हैं। यह न्यौता दीवाली के एक दिन पहले देने की परम्परा है।

अलग-अलग तिथियों में दीवाली मनाने के कारण भी अलग-अलग हैं। एक तो यह कि एक ही दिन सभी लोग दीवाली मनाएँगे तो एक-दूसरे के घर मेहमानी के लिए नहीं जा पाएँगे। दीवाली के आसपास अगर गाँव के किसी व्यक्ति की मौत हो जाए तो भी गाँव की दीवाली मनाने की तारीख में फेरबदल हो सकता है। यानी हो सकता है इस कारण भी दीवाली की तिथियाँ अलग-अलग हो गई हों। यदि गाँव में किसी के फोड़े-फुन्सी पर मक्खी बैठ जाए (कीड़े पड़ जाना) तब भी दीवाली की तिथियों में बदलाव कर दिया जाता है। तिथियों को तय करने का काम भुमका का होता है। प्रत्येक गाँव का एक भुमका होता है। भुमका गाँव के समस्त धार्मिक अनुष्ठान करवाता है। दीवाली के दो दिन पहले भुमका लोटे में पानी लेकर गाँव में घरों-घर जाता है और पानी छिड़ककर घर को पवित्र करता है। बाद में यही भुमका ग्वाल के साथ पूजा करने का काम भी करता है। भुमका यह काम गाँव प्रमुख या पटेल, बड़े-बुजुर्गों की सलाह से करता है। दीवाली के ठीक बाद अगर गाँव में कोई बड़ी दुर्घटना हो जाए या कोई बीमारी फैल जाए तो माना जाता है कि दीवाली फली नही। तब भुमका से सलाह-मशविरे के बाद दीवाली दुबारा मनाई जाती है। इस बार की दीवाली में दीवार पर गोदना बनाने के बजाए हाथ के छापे लगाए जाते हैं। बाकी सब कुछ आम दीवाली की तरह होता है।

आमतौर पर दीवाली पर लक्ष्मीपूजन रात में होता है। ठीक उसी तिथि को दिन में ग्वाल बाबा की पूजा की जाती है। हर गाँव के अपने ग्वाल बाबा होते हैं। हर गाँव में उनका एक स्थान होता है। कहीं किसी नदी के किनारे तो कहीं किसी बूढ़े बरगद के पास। ग्वाल बाबा के पूजन में नारियल चढ़ाना ज़रूरी होता है। कुछ लोग मुर्गा भी देते हैं। ऐसी मान्यता है कि ऐसा करने से गाँव के सभी जानवर खुशहाल रहेंगे। ग्वाल बाबा जानवरों को बीमारी, बाहरी बला और जंगली जानवरों से बचाएँगे। इसके बाद नारियल और पूड़ी से लक्ष्मी की पूजा की जाती है। फिर गाय की पूजा की जाती है। एक थाली में आरती सजायी जाती है। उसमें पूंड़ी, दाल-चावल, एक नारियल, एक दीप रखकर गाय के कोठे में गाय की पूजा की जाती है। कोठे में दीप जलाया जाता है। नारियल तोड़ा जाता है। फिर पटाखे चलाए जाते हैं। कुछ लोग अलसवेरे मूँग की दाल व चावल की खिचड़ी और बाटी बनाकर गाय-बैल की पूजा करते हैं। इसमें पहले गाय या बैल का मुँह धुलाते हैं। फिर बाटी और खिचड़ी खिलाकर गेरू का तिलक लगाते हैं। इसके बाद गाय या बैल को जी भर के सजाया जाता है।



गऊ पूजा के बाद अन्य देवों की पूजा की जाती है। जैसे हांडीपानी गाँव के लोग खूँटीदेव की पूजा करते हैं। खूँटीदेव वहाँ जिराती/सुखराम के खेत में स्थित हैं। खूँटीदेव की पूजा में दो बाटी और एक नारियल देना ज़रूरी होता है। इस गाँव के बड़े-बूढ़ों का मानना है कि यह देव जानवरों में दूध

बनाता है व उन्हें बीमारी से बचाता है। अगर गाँव में किसी की गाय को दूध नहीं आ रहा हो या वह बीमार हो तो लोग खूँटीदेव को मनाते हैं। देव के लिए नारियल या मुरगा कबूलते है। कबूली गई चीज़ें दीवाली पर देव को चढ़ाते हैं।

ग्वाल और दीवाली

लक्ष्मी पूजन की रात को ग्वाल जगोरा की रात कहते हैं। जगोरा में ग्वाल के साथ भुमका और ढोलक, टिमकी बजाने वाले लोग होते हैं। एक लड़की भी होती है जिसके सिर पर एक सूपा (बाँस की बनी हाथी के कानों-सी चीज़, जिसमें लोग अनाज साफ करते हैं) होता है। सूपा में - गोहोनी - का गोबर से बना चित्र होता है। सूपा में एक कुड़ा (आठ-नौ किलो की एक माप), गल्ला (अनाज), एक अण्डा, भरे लोटे के ऊपर जलता हुआ दीप रखा जाता है। यही लड़की हर घर में गोदोनी (गोदना) बनाने का काम करती है। गोदोनी गेरू के रंग से गाँव के हर घर की दीवार पर बनाई जाती हैं। जिस घर में गोदोनी बनाती है उस घर से उसे कुछ पैसे मिलते है।



जगोरा की रात ग्वाल हर घर में जाकर अनाज माँगता है। हर घर में उसकी आरती उतारी जाती है, तिलक लगाया जाता है, और उसकी पूरी ग्वाल-मण्डली को दारू पिलाना पड़ती है। इसके बाद घर वाले ग्वाल को एक सूपा में अनाज, नमक, मिर्च आदि भेंट करते हैं और पटाखे फोड़ते हैं। यह रस्म पूरे गाँव में अदा की जाती है।

गाय-बैल रंगने/सजाने का काम सुबह से शुरू हो जाता है। जिसे देखोगे वही अपने जानवरों को सजाने में लगा मिलेगा। फिर बारह बजे से गोठान भरता है। सभी लोग नहाकर तैयार होकर बारह बजे तक अपने-अपने जानवरों के साथ गोठान जाते हैं। ग्वाल को कंधे पर बैठाकर गोठान ले जाया जाता है। गोठान में मेला भरा होता है। आसपास के व्यापारी पान, मिठाई, पटाखों की दुकान लगाते हैं। इस दिन गोठान महुए (दारू) की खुशबू से तर-बतर रहता है।

ग्वाल के पहुँचते ही गोठान में जोश आ जाता है। लोग डण्डा बजाते हुए नाचते हैं। नाचने वाली इस टीम में ग्वाल व अन्य गाँव वाले होते हैं जिन्हें डंडार पार्टी कहा जाता है। यदि इस महीने में किसी की गाय या भैंस जनती है तो उसे ग्वाल को कोरा (नया) कपड़ा देना पड़ता है। यह सब गोठान में ही होता है। ग्वाल नाचते-नाचते जिस किसी के पैर पर सो जाए या पैर पकड़ ले उसे कुछ पैसे या कोई कपड़ा ग्वाल को देना पड़ता है। ग्वाल अपनी माँग कबूलवा कर ही मानता है।

पूजा-पाठ व नाच के क्रम में ग्वाल और गाय के बीच माँ-बेटे के रिश्ते की परख होती है। इसे ग्वाल-गाय खेल कहा जाता है। इस खेल में ग्वाल,गाय के सामने उसके बछड़े को पटकता है। अगर गाय ग्वाल को नही मारती है तो ग्वाल और गाय का रिश्ता हो जाता है। हांडीपानी के ही बजारी दादा ने बताया कि हमारे गाँव में यह खेल हमने बन्द कर दिया है क्योंकि एक बार एक गाय ने ग्वाले को बुरी तरह से जख्मी कर दिया था।

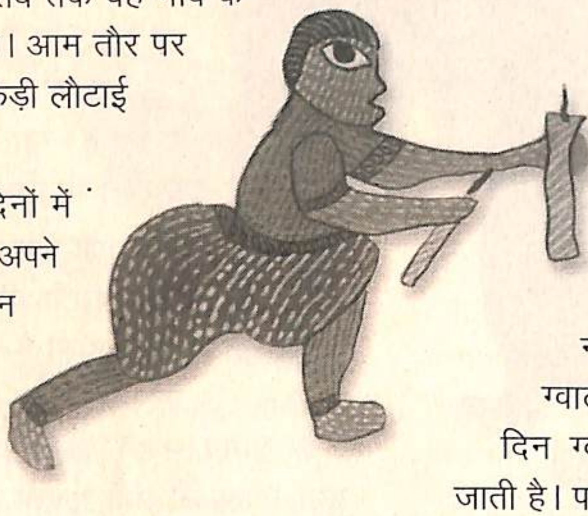
जब तक ग्वाल गुठान में होता है तब तक लोग इकट्ठे रहते हैं। नाच-गाने के खेल के बाद लोग

ग्वाल को कंधे पर बैठाकर उसके घर ले जाते हैं। गाय-बैल चराने वाले सभी लोग ग्वाल के घर जाते हैं। वहीं सूपे वाली कन्या एक परात में सभी गाय-बैल चराने वालों के पैर धोती है। जिनके पैर धोए जाते हैं वे लोग उस थाली में कुछ पैसे डालते जाते हैं। ये पैसे कन्या रख लेती है और परात का पानी ग्वाल के परिवार के लोग पी लेते हैं।

अब ग्वाल की पूजा होती है। पूजा के बाद ग्वाल एक गिलास में दूध और गोबर घोलता है और पी जाता है। बुजुर्गों का मानना है कि यदि ग्वाल ऐसा नहीं करेगा तो हमारे घर-परिवार में कोई गंभीर बीमारी आ सकती है। इस रस्म से गाँव के जानवर बीमार नहीं होंगे और खुशहाली बनी रहेगी।

पूजा-पाठ के बाद गाँव वाले ग्वाल के हाथ से लकड़ी लेते हैं। जब तक गाँव वाले उसे लकड़ी नहीं लौटाते तब तक वह गाँव के जानवर नही चराएगा। आम तौर पर पंद्रह दिन बाद ही लकड़ी लौटाई जाती है।

इन पन्द्रह दिनों में हर घर से एक व्यक्ति अपने जानवर चराता है। इन दिनों में पशु चराने वाले व्यक्ति अधिकतर बच्चे ही होते हैं। इन चरवाहों की हर तीसरे दिन आरती की जाती है और उन्हें कुछ पैसे भी दिए जाते हैं। पैसों के लालच में बच्चे जानवर चराते हैं इसलिए इस इलाके में इन दिनों स्कूल ठप्प रहता है।



इन पन्द्रह दिनों में ग्वाल क्या करते हैं?

इन दिनों में ग्वाल अपनी डंडार पार्टी के साथ आसपास के बाज़ारों में नाच-गाकर, बाँसुरी बजाकर हर दूकान से कुछ न कुछ माँगते हैं। पूरे दिन में जो भी मिलता है उसे आपस में बाँट लेते हैं। या फिर इससे सामूहिक भोज करते हैं।

पन्द्रह दिन बाद-

पन्द्रह दिनों बाद फिर सभी गाय-बैल चरवाने वाले सूपा में चार-चार पाई (अंदाज़न एक किलो की एक माप) अनाज,नमक,मिर्च आदि लेकर गोठान पहुँचते हैं। यहाँ पर ग्वाल भी आता है। इस अनाज से भोजन बनाते हैं। नारियल फोड़कर पूजा की जाती है। ग्वाल को पूड़ी खिलायी जाती है। इस दिन ग्वाल को उसकी लकड़ी वापस दी जाती है। परम्परा है कि ग्वाल को बेर की लकड़ी दी जाए। बचा अनाज ग्वाल अपने घर ले जाता है। आज ग्वाल उस लड़की को कपड़े भी भेंट करता है जो पहले विभिन्न रस्मों में भाग लेती रही है। ●

एक परम्परा का अंत...!

हांडीपानी गाँव के महेश बताते हैं कि उनके गाँव में एक परम्परा थी कि दीवाली की रात गाँव के लड़के पूड़ी-भजिए माँगने निकलते थे। हर घर से पूड़ी-भजिए इकट्ठे करके कहीं पार्टी मनाते थे। फिर न जाने क्यों लोगों को यह लगने लगा कि इस खाने के साथ घर की बीमारी दूर हो सकती है। जैसे अगर किसी के सिर में जूँ अधिक होती थीं तो वे एक जूँ भजिए में रखकर दे देते। ऐसे ही किसी के सिर के बाल झड़ रहें हो तो वह बाल पूड़ी में रखकर दे देते। ऐसा ही और बीमारियों के लिए भी करते। जब यह बात खाना माँगने वाले लड़कों को पता चली तो उन्होंने खाना माँगना बंद कर दिया। इस तरह एक परम्परा का अंत हो गया।

इस लेख की जानकारी के संग्रह में सुरेशपाल कोठा, महेश एवं राजकुमार, हांडीपानी और मुंशीलाल, देशावाड़ी ने विशेष सहयोग दिया। ये सभी शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों में अनुवर्तनकर्ता हैं।



राहुल कुमार, चौथी, नई दिल्ली



हर्षिता, आठवीं, फैज़ाबाद, उ.प्र.

दीवाली

आई दिवाली, आई दिवाली
संग फटाकों की रौनक लेकर
फुलझड़ियाँ भी संग हैं आईं
साथ में अनार और चकरी भी आई
बच्चों में है खुशियाँ छाईं
क्योंकि प्यारी दिवाली आई

मम्मी ने भी ढेर मिठाइयाँ
पकवान और जलेबियाँ बनाईं
पहने नए कपड़े बच्चों ने भी
खाई ढेर सारी मिठाई
आँखों में सपने देने
आई दिवाली, प्यारी दिवाली

सज गए घर भी दीपक से
सज गई दुकानें भी लाइटों से
फोड़े फटाके फुलझड़ियाँ जलाईं
रॉकेट भी छोड़ आकाश में
दिवाली की खुशियाँ मनाईं

आप सभी को इसी के साथ
दीपावली की हार्दिक बधाई

- रीता सिंह, नवीं, देवास, म.प्र.



रेशमा, होशंगाबाद, म.प्र.

चकमक (सितम्बर) का कवर देखकर लिखी कविता

झूला झूलें हम

झूला झूलें हम
आकाश छू लें हम
पर धरती माता को
कभी न भूलें हम।

- महिमा टंडन, इलाहाबाद, उ.प्र.

सही करो

रात का समय था
तारे भौंक रहे थे
कुत्ते चमक रहे थे
भैंस आई
चोर को उठाकर ले गई।

- अनन्त, तीसरी, भोपाल, म.प्र.

सावन के झूले

वर्षा ऋतु आई,
सबके मन भाई,
बगिया और जंगल में
खिले प्रकृति भाई
आम, बरगद, नीम
पत्ते यूँ फूले,
घर आँगन में
बाँध दिए
नन्हे-नन्हे बच्चों ने
सावन के झूले



चित्र व कविता - विनोद प्रजापति, उज्जैन, म.प्र.

वो ऐसे मिले

वो मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण थे, मुझे उनका बेसब्री से इंतज़ार था। उनके बिना कुछ समझ में नहीं आ रहा था। परंतु वो हैं कि मुझे मिल ही नहीं रहे थे। मैं उन्हें बहुत ढूँढ रही थी। उनके न मिलने के कारण मैं निराश हो रही थी। शुरू में तो चिंता नहीं की, परंतु अब लग रहा है कि यदि वो मुझे नहीं मिले तो क्या होगा, बस उनकी एक झलक ही मेरे लिए काफी थी, पर वे बहुत इंतज़ार करवा रहे थे, उनके न मिलने पर कुछ समझ नहीं आ रहा था। मैं उनके बारे में सबसे पूछने लगी। परंतु सहेली भी ऐसी कि उनके बारे में कुछ भी नहीं जानती थी। और दिन गुज़रते जा रहे थे। एक दिन मिलने का समय पता चला, परंतु वे मुझे उस समय के पूर्व मिलने चाहिए थे, तब मज़ा आता। एक सहेली आकर उनके आने की संभावना बता गई। परंतु मुझे असलियत का पता करना था कि वे कैसे हैं? आखिर उनके सही समय पर मिलने का वक्त पास आता जा रहा था। मेरा मन घबरा रहा था। वे मुझसे 4 तारीख की सुबह 9 बजे स्कूल में मिलने वाले थे। 4 तारीख भी आ गई। परंतु वो मुझे अभी तक नहीं मिले। अन्त में वो मुझे 4 तारीख के दिन सुबह 9 बजे ही मिले। आज मेरी परीक्षा का दिन था और वो मेरी वार्षिक परीक्षा के प्रश्नपत्र थे, जो मुझे अन्त में जाकर परीक्षा भवन में ही मिले।

- प्रिया पाटीदार, पाँचवीं, देवास, म.प्र.



ज्योति खत्री, पाँचवी, ग्राम-बाप, जोधपुर, राजस्थान



कनई पटेल, केजी, देवास, म.प्र.



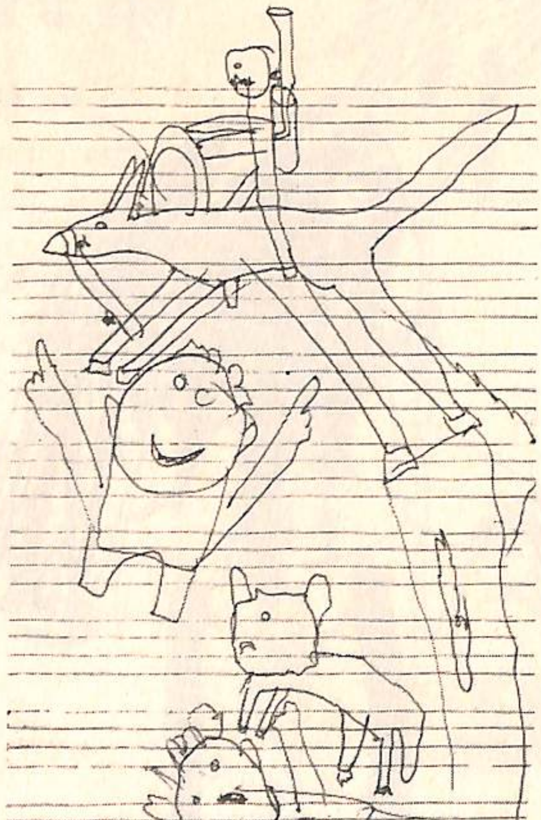
अभय जैन, डोंगरगाँव, देवास, म.प्र.

यह है आईना

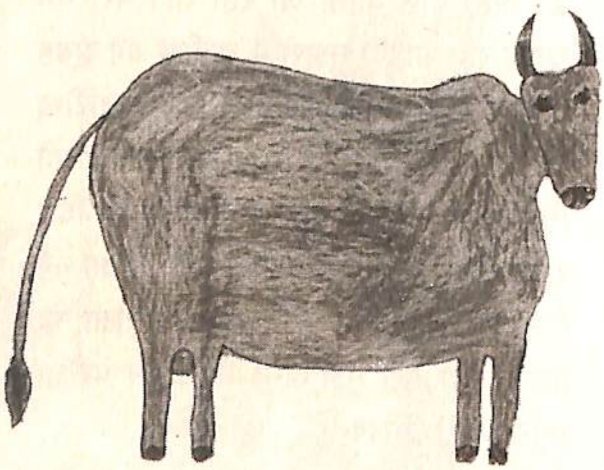
आईना हमारी शक्ल सूरत दिखाता है,
एकदम बराबर सब कुछ बताता है,
किसी को असली नकली में
फर्क समझ में नहीं है आता,
इसलिए वो आईना है कहलाता।

आईना कभी कुछ गलत नहीं दिखाता है,
वह हमेशा सच को सामने दिखाता है,
ऐसा मेरे पिताजी ने मुझसे कहा था,
और मैंने इसे सराहा था,
अब मैंने इसे अपनी पंक्तियों में बिखेरा है,
क्या यहाँ कोई ऐसा है
जिसे कुछ समझ नहीं आ रहा है।

- मोहित मदान, नवीं, दिल्ली



साकार अग्रवाल, 6 वर्ष, इन्दौर, म.प्र.



ललित भूतड़ा, गाँव-बाप, जोधपुर, राजस्थान

ये चाँद का रोशन चेहरा

वन्दना सिंह

आसमान में रात के समय जो सबसे सुन्दर चीज़ दिखाई देती है वह है चंद्रमा। क्या तुम जानते हो कि चंद्रमा की अपनी ही एक दुनिया है? हमारी धरती की ही तरह चंद्रमा भी गेंद की तरह गोल है, हालांकि चन्द्रमा धरती से बहुत छोटा है। धरती और चंद्रमा दोनों सौरमण्डल में चक्कर लगा रहे हैं। धरती सूरज का चक्कर लगाती है और चंद्रमा धरती का।

लेकिन कुछ मामलों में चंद्रमा धरती से एकदम अलग है। वह ठण्डा और वीरान है। वहाँ न कोई पेड़-पौधे उगते हैं न कोई पशु दौड़ते हैं। न वहाँ साँस लेने के लिए हवा है न पीने के लिए पानी। क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि चंद्रमा की सतह पर खड़े होने पर कैसा लगता होगा? पहली बार सन् 1969 में किसी मनुष्य ने चंद्रमा की सतह पर पाँव रखा था। उसे खास तरह के कपड़े पहनने पड़े थे और साँस लेने के लिए हवा भी अपने साथ ले जानी पड़ी थी।

रात के समय यदि तुम आसमान को देखो तो तुम्हें बहुत-सी चीज़ें दिखाई देंगी। कभी चंद्रमा दिखाई देगा, कभी नहीं। कभी आधा चन्द्रमा दिखाई देगा तो कभी पूरा। कभी उड़ते हुए हवाईजहाज़ों की जलती-बुझती रोशनी दिखाई देगी तो कभी सैकड़ों-हज़ारों टिमटिमाते तारे दिखाई देंगे।

जब हम ब्रह्माण्ड के बारे में सोचते हैं तो हमें मालूम पड़ता है कि ये सब बगैर किसी नियम के नहीं हो रहा है। सिर के ऊपर दिखाई देते अनन्त आकाश में एक व्यवस्था, एक तरतीब है। जैसे कि सूरज है, तो वह हर शाम अस्त होता है और हर सुबह उदित होता है। यदि तुम किसी गेंद को हवा में उछालो तो वह ऊपर ही नहीं जाती, कुछ देर बाद नीचे गिरती है। वैज्ञानिक का काम यही है कि वह प्रकृति के छिपे हुए नियमों का पता लगाए, ताकि हम उनका कारण समझ सकें। और इस आधार पर अन्य चीज़ों के बारे में भी अनुमान लगा सकें।

वैज्ञानिक हर चीज़ का अवलोकन बड़े ध्यान से करते हैं। उन्हें स्पष्ट और सटीक रूप में अपनी बात कहनी होती है। अच्छे वैज्ञानिक बहुत विनम्र भी होते हैं, क्योंकि जो एक बात हम पूरी पक्की तरह जानते हैं वह यह है कि हम सब कुछ नहीं जानते हैं।

तो चलो, हम भी विस्तार से एक अवलोकन करते हैं जिसके आधार पर प्रकृति के एक नियम से परिचित हो सकें। हम ऐसा करेंगे कि इक्कीस रातों तक हर रात एक निश्चित समय पर चंद्रमा को देखेंगे और इसका अपनी कॉपी में एक चित्र बनाते

तिथि	तिथि	तिथि	तिथि	तिथि	तिथि	तिथि ....
तिथि	तिथि	तिथि	तिथि	तिथि	तिथि	तिथि ....
तिथि	तिथि	तिथि	तिथि	तिथि	तिथि	तिथि ....

चित्र - 1

जाएँगे। देखें, कि इन अवलोकनों से कोई समझ में आनेवाला सिलसिला बनता है या नहीं! चित्र - 1 में तीन सप्ताह के सभी दिनों के लिए अलग-अलग खाने बने हुए हैं। हर रात खुले में जाकर चन्द्रमा को देखो और वह जैसा दिखाई दे, खाने में उसका चित्र बना दो। अँधेरे वाले हिस्से को काला कर दो। हरेक के नीचे तारीख डाल दो। यदि किसी दिन आसमान में बादल हों तो उस खाने के नीचे तारीख डालकर उसे खाली छोड़ दो। यदि चन्द्रमा किसी रात न दिखाई दे तो उस दिन के खाने में 'नहीं दिखा' लिख दो।

चाँद हर दिन अलग-अलग समय पर निकलता है। चाँद का अवलोकन करने के लिए शाम से ही ध्यान रखना होगा कि वह कब दिखाई दिया।

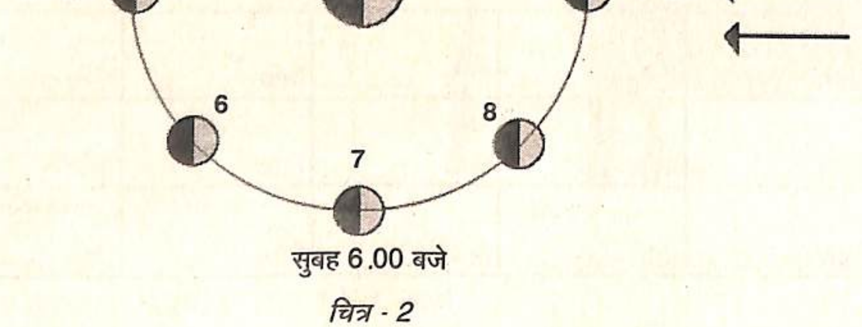
तीन हफ्ते बाद देखो चाँद किस-किस आकार में दिखा? किस तारीख को पूरा था? किस तारीख को आधा? किस दिन नहीं दिखा?

क्या तुम इन चित्रों पर अमावस, दूज, सप्तमी, एकादशी और पूर्णिमा लिख सकते हो?

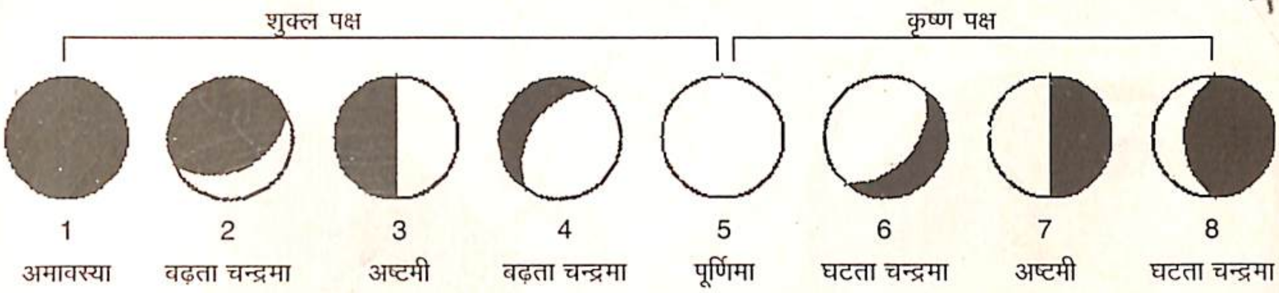
जो प्रश्न हमें अपने आपसे पूछना है वह यह है कि चन्द्रमा हर रात कुछ अलग क्यों दिखाई देता है? ऐसा क्यों होता है कि किसी रात यह पूरा गोल होता है तो किसी रात एक पतली-सी फाँक जैसा? ऐसा क्यों होता है कि कभी इसका बायाँ भाग चमकता दिखाई देता है और कभी दाहिना?

हालाँकि ये सवाल कोई नए नहीं है लेकिन अपने आप इनके जवाब पता करने में मज़ा आएगा। यह जानना कितना सुखद होगा कि हमारे ब्रह्माण्ड में कुछ ऐसा है जिसे हम अच्छी तरह समझ पा रहे हैं।

पुराने ज़माने में अलग-अलग जगह के लोग ब्रह्माण्ड के बारे में अलग-अलग तरह से सोचते थे! कुछ लोगों को लगता था कि धरती तो अपनी जगह पर स्थिर है, सूरज ही उसका चक्कर लगा रहा है। आज हम जानते हैं कि बात इससे ठीक उलटी है। धरती सूरज का चक्कर लगाती है और चन्द्रमा धरती का चक्कर लगाता है। जिन लोगों ने यह पता लगाया उनमें से एक - आर्यभट्ट - भारत के ही थे जो संभवतः ईसा पूर्व 500 में हुए थे। बाद में 1500 ई.में पोलेण्ड के खगोलशास्त्री कॉपरनिकस ने इसकी पुष्टि की। लेकिन बहुत समय तक यूरोप के लोगों ने उनकी बात नहीं मानी।



चित्र - 2



चित्र - 3

अब अगले चित्र में देखो - बन गये न धरती के गिर्द घूमते चन्द्रमा के अलग-अलग चेहरे?

सूरज की रोशनी दाहिनी तरफ से आ रही है और आधी पृथ्वी पर उजाला कर रही है। और आधे चन्द्रमा पर भी। ध्यान से देखो, रात के समय, यानी पृथ्वी के अँधेरे हिस्से से चन्द्रमा को देखने पर उसके अलग-अलग हिस्से उजले दिखाई देते हैं। पूरा चन्द्रमा सिर्फ तब दिखाई देता है जब पृथ्वी के एक तरफ सूरज हो और दूसरी तरफ चन्द्रमा। ध्यान देने की बात है कि पृथ्वी चन्द्रमा पर पड़ने वाली सूरज की रोशनी के आड़े नहीं आती, सिवा उन कुछ मौकों के जिन्हें 'चन्द्रग्रहण' कहा जाता है।

अपने अवलोकन करने के बाद शायद तुम समझ पाओगे कि चन्द्रमा की कलाओं का क्या सिलसिला होता है। चित्र 2 व 3 को एक साथ देखने पर शायद तुम समझ पाओ कि ऐसा क्यों होता है। चन्द्रमा की चाल का कुछ अन्दाज़ा होता है? कुछ दिन बाद ऐसा होगा कि तुम आसमान में चन्द्रमा को देखोगे और बता सकोगे कि तीन-चार दिन बाद वह कैसा दिखेगा।

अब ज़रा कल्पना करो कि अगर तुम चन्द्रमा पर ही खड़े होते तो तुम्हें कैसा लगता? पृथ्वी के बाहर यही एक ऐसी जगह है जहाँ इंसान पहुँचा है। कहते हैं इससे आगे भी बहुत सी दुनिया हैं - हमारे अपने सूरज का चक्कर काटते ग्रह और उपग्रह और फिर दूसरे सूरज और उनके भी ग्रह और उपग्रह! ब्रह्माण्ड एक बहुत बड़ा रहस्यलोक है। इस रहस्य को सुलझाने के लिए सबसे पहले सवाल पूछना पड़ता है। क्या तुम चन्द्रमा के बारे में कुछ और सवाल पूछ सकते हो? ●

जैसे धरती पर सूर्योदय होता है वैसे ही चन्द्रमा पर पृथ्वी का उदय होता है। कैसे? देखो, भीतरी कवर पर चन्द्रमा से लिये गए धरती के दुर्लभ चित्र





जाएँगे। देखें, कि इन अवलोकनों से कोई समझ में आनेवाला सिलसिला बनता है या नहीं! चित्र - 1 में तीन सप्ताह के सभी दिनों के लिए अलग-अलग खाने बने हुए हैं। हर रात खुले में जाकर चन्द्रमा को देखो और वह जैसा दिखाई दे, खाने में उसका चित्र बना दो। अँधेरे वाले हिस्से को काला कर दो। हरेक के नीचे तारीख डाल दो। यदि किसी दिन आसमान में बादल हों तो उस खाने के नीचे तारीख डालकर उसे खाली छोड़ दो। यदि चन्द्रमा किसी रात न दिखाई दे तो उस दिन के खाने में 'नहीं दिखा' लिख दो।

चाँद हर दिन अलग-अलग समय पर निकलता है। चाँद का अवलोकन करने के लिए शाम से ही ध्यान रखना होगा कि वह कब दिखाई दिया।

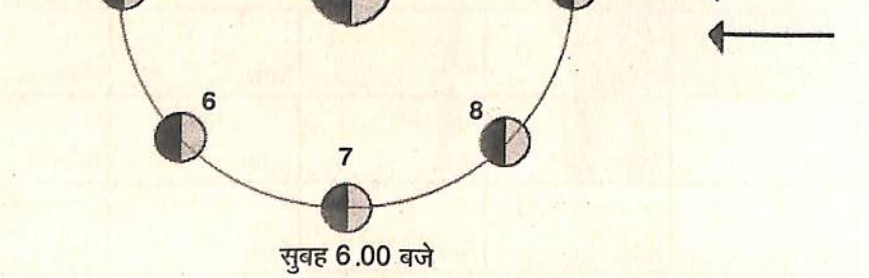
तीन हफ्ते बाद देखो चाँद किस-किस आकार में दिखा? किस तारीख को पूरा था? किस तारीख को आधा? किस दिन नहीं दिखा?

क्या तुम इन चित्रों पर अमावस, दूज, सप्तमी, एकादशी और पूर्णिमा लिख सकते हो?

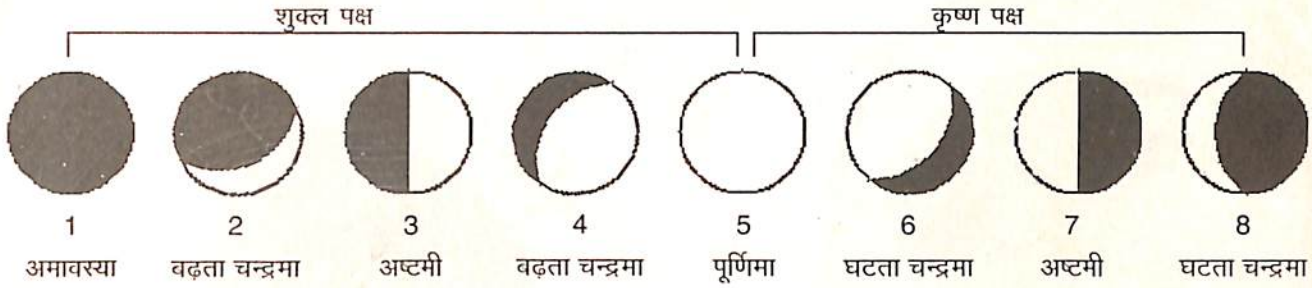
जो प्रश्न हमें अपने आपसे पूछना है वह यह है कि चन्द्रमा हर रात कुछ अलग क्यों दिखाई देता है? ऐसा क्यों होता है कि किसी रात यह पूरा गोल होता है तो किसी रात एक पतली-सी फाँक जैसा? ऐसा क्यों होता है कि कभी इसका बायाँ भाग चमकता दिखाई देता है और कभी दाहिना?

हालाँकि ये सवाल कोई नए नहीं है लेकिन अपने आप इनके जवाब पता करने में मज़ा आएगा। यह जानना कितना सुखद होगा कि हमारे ब्रह्माण्ड में कुछ ऐसा है जिसे हम अच्छी तरह समझ पा रहे हैं।

पुराने ज़माने में अलग-अलग जगह के लोग ब्रह्माण्ड के बारे में अलग-अलग तरह से सोचते थे! कुछ लोगों को लगता था कि धरती तो अपनी जगह पर स्थिर है, सूरज ही उसका चक्कर लगा रहा है। आज हम जानते हैं कि बात इससे ठीक उलटी है। धरती सूरज का चक्कर लगाती है और चन्द्रमा धरती का चक्कर लगाता है। जिन लोगों ने यह पता लगाया उनमें से एक - आर्यभट्ट - भारत के ही थे जो संभवतः ईसा पूर्व 500 में हुए थे। बाद में 1500 ई.में पोलेण्ड के खगोलशास्त्री कॉपरनिकस ने इसकी पुष्टि की। लेकिन बहुत समय तक यूरोप के लोगों ने उनकी बात नहीं मानी।



चित्र - 2



चित्र - 3

अब अगले चित्र में देखो - बन गये न धरती के गिर्द घूमते चन्द्रमा के अलग-अलग चेहरे?

सूरज की रोशनी दाहिनी तरफ से आ रही है और आधी पृथ्वी पर उजाला कर रही है। और आधे चन्द्रमा पर भी। ध्यान से देखो, रात के समय, यानी पृथ्वी के अँधेरे हिस्से से चन्द्रमा को देखने पर उसके अलग-अलग हिस्से उजले दिखाई देते हैं। पूरा चन्द्रमा सिर्फ तब दिखाई देता है जब पृथ्वी के एक तरफ सूरज हो और दूसरी तरफ चन्द्रमा। ध्यान देने की बात है कि पृथ्वी चन्द्रमा पर पड़ने वाली सूरज की रोशनी के आड़े नहीं आती, सिवा उन कुछ मौकों के जिन्हें 'चन्द्रग्रहण' कहा जाता है।

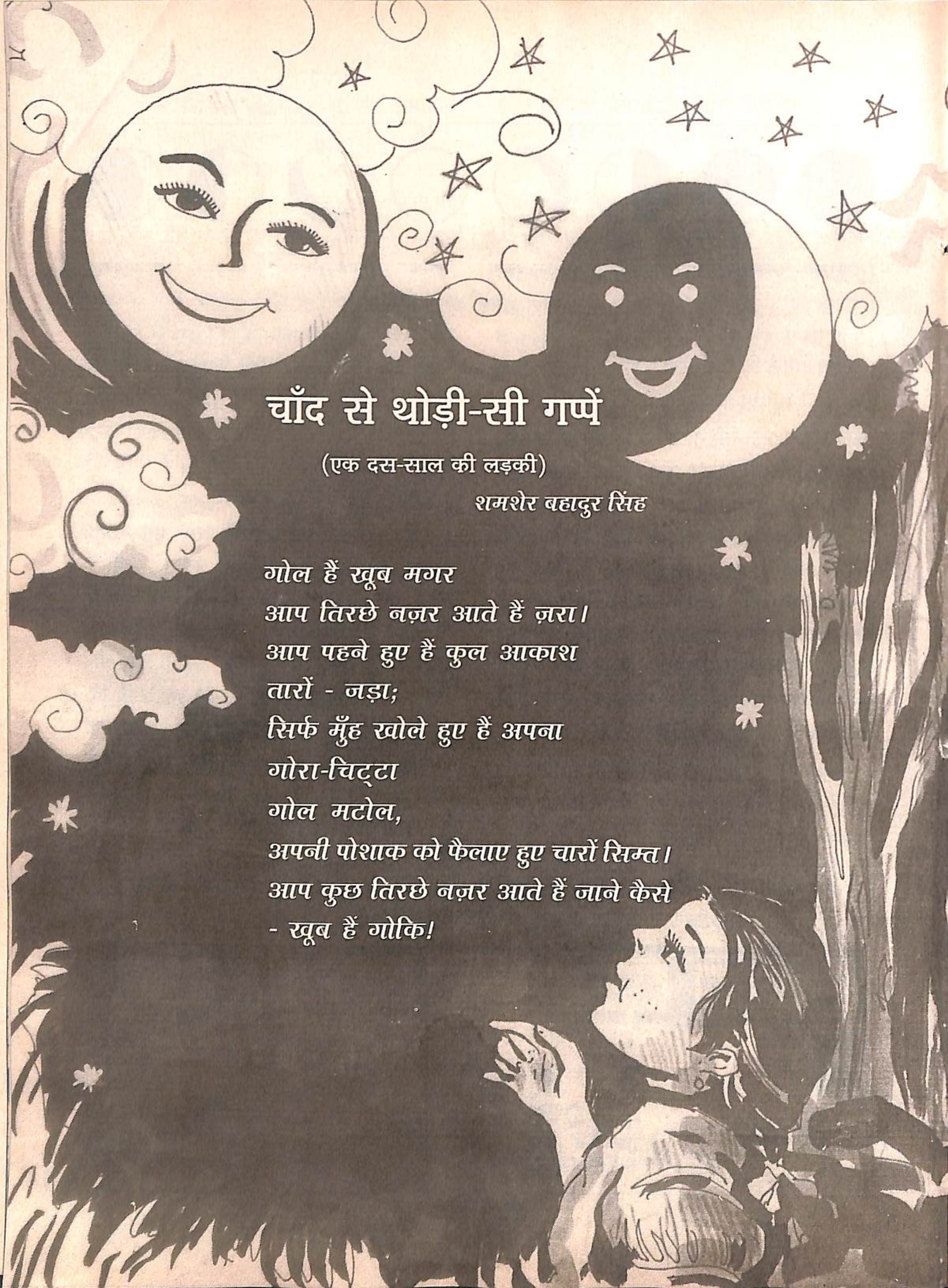
अपने अवलोकन करने के बाद शायद तुम समझ पाओगे कि चन्द्रमा की कलाओं का क्या सिलसिला होता है। चित्र 2 व 3 को एक साथ देखने पर शायद तुम समझ पाओ कि ऐसा क्यों होता है। चन्द्रमा की चाल का कुछ अन्दाज़ा होता है? कुछ दिन बाद ऐसा होगा कि तुम आसमान में चन्द्रमा को देखोगे और बता सकोगे कि तीन-चार दिन बाद वह कैसा दिखेगा।

अब ज़रा कल्पना करो कि अगर तुम चन्द्रमा पर ही खड़े होते तो तुम्हें कैसा लगता? पृथ्वी के बाहर यही एक ऐसी जगह है जहाँ इंसान पहुँचा है। कहते हैं इससे आगे भी बहुत सी दुनिया हैं - हमारे अपने सूरज का चक्कर काटते ग्रह और उपग्रह और फिर दूसरे सूरज और उनके भी ग्रह और उपग्रह! ब्रह्माण्ड एक बहुत बड़ा रहस्यलोक है। इस रहस्य को सुलझाने के लिए सबसे पहले सवाल पूछना पड़ता है। क्या तुम चन्द्रमा के बारे में कुछ और सवाल पूछ सकते हो? ●

जैसे धरती पर सूर्योदय होता है वैसे ही चन्द्रमा पर पृथ्वी का उदय होता है। कैसे? देखो, भीतरी कवर पर चन्द्रमा से लिये गए धरती के दुर्लभ चित्र





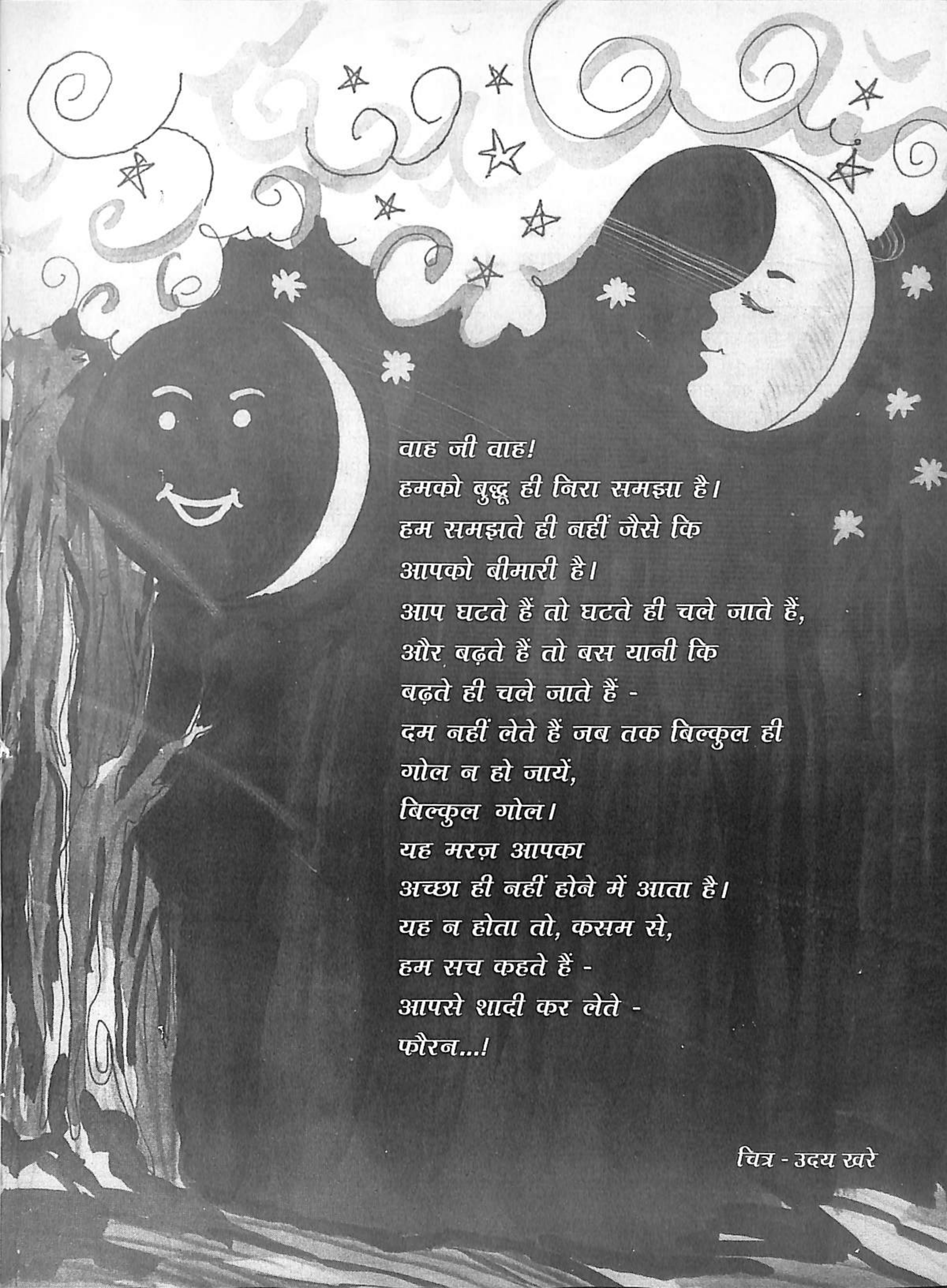


चाँद से थोड़ी-सी गप्पें

(एक दस-साल की लड़की)

शमशेर बहादुर सिंह

गोल हैं खूब मगर
आप तिरछे नज़र आते हैं ज़रा।
आप पहने हुए हैं कुल आकाश
तारों - जड़ा;
सिर्फ मुँह खोले हुए हैं अपना
गोरा-चिट्टा
गोल मटोल,
अपनी पोशाक को फैलाए हुए चारों सिम्त।
आप कुछ तिरछे नज़र आते हैं जाने कैसे
- खूब हैं गोकि!



वाह जी वाह!
हमको बुद्धू ही निरा समझा है।
हम समझते ही नहीं जैसे कि
आपको बीमारी है।
आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं,
और बढ़ते हैं तो बस यानी कि
बढ़ते ही चले जाते हैं -
दम नहीं लेते हैं जब तक बिल्कुल ही
गोल न हो जायें,
बिल्कुल गोल।
यह मरज़ आपका
अच्छा ही नहीं होने में आता है।
यह न होता तो, कसम से,
हम सच कहते हैं -
आपसे शादी कर लेते -
फौरन...!

चित्र - उदय खरे

डींग

– लोक बाबू

पिछले अंक से आगे...

प्यारेलाल जी अब भी मदिरा के नशे में धुत्त थे। उन्हें नींद आ गई थी। कुर्सी पर बैठे खर्राटे ले रहे थे। पत्नी को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। संगीत की आवाज़ सुनकर उसने टीन के द्वार के सूराख से देखा। सारा काफिला उन्हीं के घर की ओर मुँह किये खड़ा है। और ये प्यारेलाल जी हैं कि धुत्त पड़े हैं। पता नहीं बाहर इन्होंने क्या कर डाला, जो इतने सारे सिपाही यहाँ आये हैं? उसने प्यारेलाल जी को हिलाया-डुलाया। मगर वे कुनमुनाकर फिर पसर गये। तब पत्नी ने एक लोटा पानी ही उनके सिर पर डाल दिया। प्यारेलाल जी हड़बड़ाकर उठ बैठे।

"हे भगवान, ये क्या कर रही हो? मैं सुबह ही नहा लिया था।"

"नहाया होगा, मगर अब होश में आओ। बाहर सिपाही आपका इंतज़ार कर रहे हैं।"

"मेरा इंतज़ार?" – प्यारेलाल जी घबराये।

"हाँ लगता तो यही है। बाहर झांक कर देख लो।"

"मगर मैंने तो कुछ नहीं किया।"

"अब यह तो आप जानो और वे जानें।....... पर एक बार बाहर जाकर पूछ तो लो, क्या बात है?"

"तुम्हीं पूछ लो। मेरा सिर चकरा रहा है।"

इतना कहकर वह रसोई के कमरे में जा बैठे।

पत्नी द्वार खोलकर बाहर आयी। दूर खड़े मंत्री ने देखा तो दौड़ता हुआ आया। झुककर सलाम किया। बोला– "प्यारेलाल जी को महाराज हिम्मत-शाह जी ने याद किया है, यह रथ उन्हीं की सेवा में भेजा गया है।"

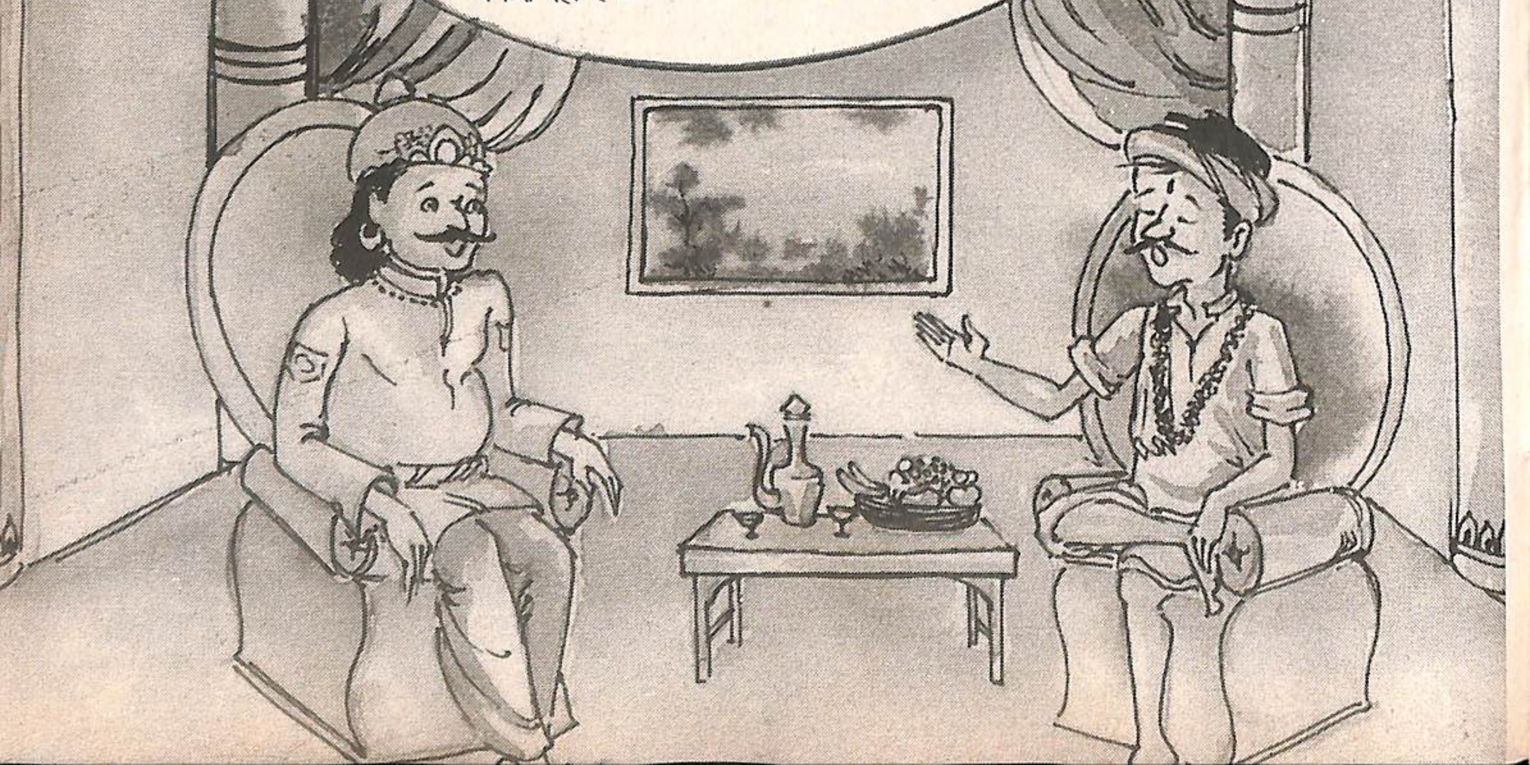
पत्नी ने उससे कुछ नहीं कहा। घर के अंदर आयी और पति से सारी बात कह दी। पत्नी की बात सुनकर वह बोले– "तुम्हारी कसम खाता हूँ, मैंने कोई अपराध नहीं किया है और न ही ऐसा कोई काम किया है कि महाराज मेरा सम्मान करें। फिर भी पता नहीं क्यों फंदा मेरे ही गले पड़ा जा रहा है।"

"लेकिन अब करोगे क्या? महाराज ने बुलवाया है। जाना तो पड़ेगा ही!" – पत्नी ने कहा।

"सो तो है ही।........ तुम एक काम करो। उनसे कहो कि वे सब चले जाएँ। किसी एक को छोड़ जाएँ। मैं उसके साथ आता हूँ, थोड़ी देर में। भागूँगा नहीं।"

पत्नी ने आकर मंत्री से कहा– "प्यारेलाल जी तैयार होकर आ रहे हैं। कोई भी एक व्यक्ति रुक जाये। बाकी सब चले जाएँ।"

मंत्री ने कहा– "जैसी उनकी मरज़ी।"



मगर प्यारेलाल जी के साथ आने को कोई सिपाही तैयार नहीं हो रहा था। सब डर रहे थे। मंत्री ने कहा– "अच्छा तुम लोग चलो। मैं स्वयं आता हूँ उनके साथ।"

बैण्ड बाजे वाले और सभी सिपाही चले गये।

भयभीत प्यारेलाल जी झूठी अकड़ के साथ घर से बाहर निकले। अब संकट निश्चित मानकर उन्होंने तय किया कि डर कर नहीं मरेंगे। जो होगा, देखा जाएगा। मरना तो एक ही बार है। सो उन्होंने अपने कपड़े ठीक-ठाक किये। केश सँवारे। फिर अकड़ते-मुस्कराते, मंत्री के पास पहुँचे। मंत्री ने उन्हें झुककर सलाम किया। फिर कहा– "आपकी सेवा में रथ खड़ा है, हुजूर!"

"चलिए।" प्यारेलाल जी ने मंत्री के सलाम का लापरवाही से जवाब देते हुए कहा।

रास्ते में प्यारेलाल जी ने मंत्री से महाराज के बुलावे का कारण पूछा। मंत्री ने दो बार तो टाल दिया, फिर बतलाया कि आपका एक पत्र महाराज तक पहुँचा है। महाराज यह जानकर अत्यधिक प्रसन्न हैं कि आप एक बार में हज़ार को मार लेते हैं। इतना बड़ा पहलवान तो मैंने भी आज तक नहीं देखा। आपके साथ चलते हुए मुझे बड़ा गर्व हो रहा है। इतनी पतली-दुबली काया, मगर भरी लबालब माया।

प्यारेलाल जी के कान खड़े हो गये। एक बार में हज़ार को मारा – वाली बात तो उन्होंने आज ही लिखी थी। जाने कैसे पुर्ज़ा महाराज तक पहुँच गया। हे भगवान! अब तू ही सहायता कर। कहाँ मैंने गिनकर कुल जमा दस मक्खियाँ मारीं। हज़ार लिख गया। उस पर 'मक्खी' हटा दिया। महाराज आदमी समझ बैठे! कहाँ मैं और कहाँ हज़ार आदमी! मेरे सौ पुरखे मिलकर इतनों को नहीं मार सकते।

लेकिन अब तो अपने ही बुने जाल में फँस गये हैं। निकलना मुश्किल है। अगर मैं महाराज को साफ-साफ कह दूँ तो वे परेशान करने के जुर्म में कत्ल करवा देंगे। चलो आज किसी तरह महाराज का सामना कर लें, मौका मिला तो फिर बस इस राज्य से ही निकल भागेंगे। अभी तो यमराज की हँसी और महाराज का बुलावा एक ही समझो।

प्यारेलाल जी को लेकर रथ महाराज के राजभवन के सामने पहुँचा। वहाँ खड़े राज्य कर्मचारियों ने उनकी जयजयकार की। महाराज भी उन्हीं के साथ खड़े थे। आगे बढ़कर प्यारेलाल जी को गले लगा लिया। फिर उनके गले में फूलों का एक हार पहनाया। माथे पर तिलक किया।

प्यारेलाल जी अंदर से काँपते और ऊपर से मुस्कराते रहे। इतनी आवभगत के बाद महाराज उन्हें अपने दरबार में ले गये। वहाँ खूब जलपान की व्यवस्था थी। खूब खातिरदारी के बाद महाराज ने कहा– "प्यारेलाल जी, आपसे मिलकर हमें सच में हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हमें अपने निकम्मे गुप्तचरों और कमज़ोर सैनिकों पर शर्म आती है। इतना बड़ा व्यक्ति हमारे राज्य में था और हमें आज जाकर पता चल रहा है।



आप जैसे व्यक्ति तो धरती पर दुर्लभ हैं। रामायण और महाभारत के ज़माने में ही एक बार में हज़ारों को मारने वाले योद्धा मिला करते थे। आप चाहें तो आज से ही हमारे साथ राज भवन में रहें। हमें बड़ी खुशी होगी।''

प्यारेलाल जी ने सोचा - यहाँ आ गया तो मरना और निश्चित हो जायेगा। मगर यहाँ से भाग कर निकला भी कैसे जाये? प्रकट में उन्होंने कहा- ''महाराज, आपका आग्रह मैं ज़रूर पूरा करता, मगर घर में पत्नी है, उससे भी तो सलाह लेनी पड़ेगी। मैं कुछ दिनों में सोच कर बतलाऊँगा।''

''जैसा आप उचित समझें।'' - महाराज ने कहा- ''मगर आपसे एक और ज़रूरी निवेदन है। यह काम आप ही कर सकते हैं। प्यारेलाल जी!''

''कहिए!'' उनका कलेजा काँप रहा था।

''देखिये, बात यह है कि हमारे राज्य में एक पागल हाथी आ गया है। उसने बहुत उत्पात मचा रखा है। सौ-सौ सैनिकों को उसे पकड़ने या मार डालने के लिए भेजा। मगर सब बेकार। सब खाली लौट आये। वनवासी जनता उस पागल हाथी से घबराई हुई है। सहायता के लिए मेरी तरफ देखती है। मैं अपने निकम्मे सैनिकों की ओर देखता हूँ और अपनी किस्मत पर रोता हूँ। लेकिन अहोभाग जो आप मिल गये।......... बोलिए, हाथी को आप मार तो देंगे ना!''

हूँ, तो ये बात है! प्यारेलाल जी ने सोचा। चित्त में भी मरना है, पट्ट में भी मरना है। तभी इतनी आवभगत हो रही है। मैं........ और पागल हाथी मारूँगा? मक्खी मारने वाले की ऐसी तरक्की न कभी देखी न सुनी। लेकिन अब मुकरने का मौका ही नहीं है। यहाँ से जान बचे तो फिर आगे की सोची जाए।

''कितने पागल हाथी हैं?'' - प्यारेलाल जी ने अपनी शेखी का अंदाज़ नहीं छोड़ा।

''बस एक ही है, प्यारेलाल जी।'' - महाराज ने अत्यधिक प्रभावित होकर उनका हाथ दबाते हुए कहा - ''बताइये, कब मारेंगे, उसे?''

''आप इजाज़त दें तो आज ही रात को उसे मार डालूँ!''

''वाह वाह वाह! आप धन्य हैं, प्यारेलाल जी अब वैसे देवता रहे नहीं वरना आकाश से पुष्प वर्षा होने लगती। आप से यही आशा थी। आप सच में......... हज़ार मार सकते हैं। राज्य की ओर से आपका आज से एक उपनाम भी रहेगा,- ''हज़ारासिंह।''

एक दरबारी ने उठकर आवाज़ लगायी- ''हज़ारासिंह की........!''

सारा दरबार चिल्ला उठा - ''जय!''

''प्यारेलाल की...।''

''जय।''

शाम ढल चुकी थी। प्यारेलाल जी ने महाराज से कहा - ''मुझे यहाँ से जल्दी विदा कीजिए, महाराज! रात होने को आयी। अगर मैं यहीं रह गया तो फिर उस पागल हाथी का क्या होगा? मुझे आज ही रात उसे



मारना है!"

महाराज ने गदगद होकर उन्हें गले लगाया। सिंहद्वार तक खुद छोड़ने आये। महाराज तो यह भी चाहते थे कि प्यारेलाल जी अपने साथ कुछ सैनिक, घोड़े, हथियार आदि रख लें। मगर प्यारेलाल जी ने इंकार कर दिया। कहा कि अगर इन्हीं के दम पर पागल हाथी मारा जाना होता तो आपके आदमी कब के उसे मार चुके होते। मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं अकेले उसे मारूँगा।

❊ ❊ ❊

प्यारेलाल जी ने अपने घर का द्वार धक्का मार कर खोला। अंदर घुसे और धड़ाम से बंद भी कर दिया। वे दौड़ते-भागते आये थे। बंद द्वार से पीठ सटाए खड़े हाँफ रहे थे। पत्नी घर में परेशान बैठी थी। घर में दीया भी न जला था।

पति को आया पाकर पत्नी उठी। पास आई और पूछा- "सब ठीक तो है न?"

"अब क्या बताऊँ क्या ठीक है और क्या खराब!"

"फिर भी........।"

"समझो कि ज़िन्दा हूँ मगर जान नहीं।"

"साफ-साफ कहो कि क्या बात है?"

प्यारेलाल जी ने सारी बात पत्नी को बता दी। अंत में कहा- "अब जल्दी से मेरे लिए रोटी सेंक दो। महाराज का भोजन भी गले से न उतर पाया। अभी भूख भी मर गयी है। रास्ते में कहीं भूख लगी तो खाऊँगा। जल्दी से रातों-रात इस देश की सीमा से पार निकल जाता हूँ। जब वहाँ पहुँच जाऊँगा, तब तुम्हें पत्र भेजकर बुलवा लूँगा। यहाँ तो जान पर आफत आई हुई है। एक तरफ महाराज, दूसरी तरफ पागल हाथी। दो पाटन के बीच साबुत न बच पाऊँगा।.......और तुमने आज दीया क्यों नहीं जलाया? खैर, नहीं जलाया तो अच्छा किया। अब जलाओ भी मत। क्या पता महाराज के सिपाही मेरा भेद लेने बाहर से झाँक रहे हों।"

"ठीक है।" - पत्नी ने कहा। उसने बाजरा लिया और पत्थर की चक्की में पीसने बैठ गई।

संयोग से पत्थर की चक्की के मुँह से एक साँप अंदर घुस बैठा था। ज़हरीले नाग का बच्चा था। अँधेरे में पत्नी ने चक्की के मुँह में बाजरा ठूँस कर चक्की घुमा दी। साँप का बच्चा बाहर न निकल पाया। वह मर कर पिस गया। पत्नी ने आटा गूँथा, लकड़ी का चूल्हा जलाया और एक मोटी सी 'अंगरा' रोटी बनाकर सेंक दी। सब्ज़ी बनाने का समय न था। थोड़ा गुड़ साथ रख दिया।

प्यारेलाल जी ने पत्नी से विदा ली। रोटी-गुड़ की थैली रखी, गले में गमछा लटकाया। भगवान का नाम लिया और चल पड़े।

आकाश में चांद नदारद था, तारे टिमटिमा रहे थे। वृक्षों पर जुगनुओं ने डेरा डाल रखा था। आबादी की सीमा पार होते ही प्यारेलाल जी दौड़ने लगे।

आगे क्या हुआ? क्या प्यारेलाल जी हाथी को मार पाए? पढ़ो अगले अंक में



चित्र- विवेक वर्मा

ईद

ईद चाँद के महीनों के हिसाब से आती है। चाँद के महीनों के हिसाब से बने कैलण्डर में हर साल 10 दिन कम हो जाते हैं। इसलिए ईद भी दस दिन पीछे सरक जाती है और हर तीन साल में ईद का महीना बदल जाता है। खुशी की बात यह है कि इस बार ईद और दीवाली दोनों साथ-साथ एक ही सप्ताह में मनाए जाएँगे।

1 नवम्बर को दीवाली मनाई जाएगी और उसके तीन-चार दिन बाद 4 या 5 नवम्बर को ईद।



मैं बचपन से एक ऐसे मुहल्ले में रहती आयी हूँ जहाँ हिन्दू और मुस्लिम दोनों समाजों के घर हैं। इसलिए दीवाली पर मुझे नए कपड़ों के साथ पटाखे फोड़ने को तो मिलते ही हैं, ईद पर भी नए कपड़ों के साथ सिंवई, ज़र्दा (पीले मीठे चावल), बिरयानी, कबाब, छोले और तरह-तरह के पकवान खाने को मिलते हैं। क्यूँ आ गया न तुम्हारे मुँह में भी पानी!

क्या तुम्हें पता है कि अरबी भाषा में **'ईद'** का अर्थ है खुशी मनाना। इसलिए ईद का नाम लेते ही नई पोशाकों, नए झुमकों, नए चप्पल-जूतों और कई तरह के पकवानों की याद आने लगती है। पहले मुझे लगता था कि एक ही साल में ईद दो बार क्यूँ मनाई जाती है। लेकिन एक बुज़ुर्ग ने मुझे बताया कि रमज़ान के बाद जो ईद मनाई जाती है उसे **'ईद उल फित्र'** कहते हैं और जिस पर कुर्बानी दी जाती है उसे **'इदुज्ज़ुहा'** कहते हैं।

आपस में मिलजुलकर नमाज़ पढ़ना, गले मिलना, रूठे हुओं को मनाना, दोस्तों के यहाँ ईद मिलने जाना और रिश्तेदारों व दोस्तों की कब्र पर जाना - ये दृश्य ईद के दिन आम होते हैं।

रमज़ान के दिनों में आधी रात से ही रसोईघरों में बर्तनों की खट-पट सुनाई देने लगती है। क्योंकि घर की औरतें आधी रात को उठकर सबकी **'सेहरी'** के लिए खाना तैयार करती हैं। सेहरी यानि सूरज निकलने से पहले खाना खाकर और नमाज़ पढ़कर रोज़ा बन्द करना।

कुछ भी खाए-पिए बिना दिनभर रोज़ा रखने के बाद शाम को सूरज डूबने के बाद नमाज़ पढ़कर और कुछ खाकर रोज़ा खोला जाता है। इसे **इफ़्तारी** कहते हैं।

मेरे दोस्त मुझे अक्सर इफ़्तारी के लिए बुलाते हैं। इफ़्तारी के वक्त रंग-बिरंगी नुक्ती, खारे, पापड़ और खजूर आदि से सजी टेबिलें मुझे बहुत सुन्दर लगती हैं।

क्या तुम्हारा कोई दोस्त है, जो ईद या दीवाली पर तुमसे मिलने आता हो? अगर नहीं, तो जल्दी से एक दोस्त बनाओ, जिसके घर इन त्यौहारों पर तुम मिलने जा सको और वो भी तुम्हारे यहाँ आ सके। फिर तुम भी मेरी तरह दोनों त्यौहारों का भरपूर मज़ा ले सकोगे।

क्यूँ और कब मनाई जाती है ईद उल फित्र

रोज़ा खोलने को **फित्र** कहते हैं। **रमज़ान** के महीने के बाद **शव्वाल** के महीने की पहली तारीख को चाँद देखकर **ईद उल फित्र** मनाई जाती है। यह ईद इस खुशी में मनाई जाती है कि रमज़ान के पवित्र महीने में लोगों ने रोज़े रखे, इबादत की, झूठ बोलने जैसे बुरे कामों से बचने का प्रयास किया। इस दिन नए कपड़े पहनकर सब मिलजुलकर मस्ज़िद में नमाज़ पढ़ते हैं।

रमज़ान के महीने में रोज़े इसलिए रखे जाते हैं क्योंकि कुरान की एक आयत में अल्लाह का यह हुक्म है कि जो भी रमज़ान का महीना अपनी ज़िन्दगी में पाए वो इस महीने में रोज़े रखे।

इस दिन बड़े अपने छोटों को **ईदी** देते हैं। ईदी यानि तरह-तरह के उपहार। अपनी मनपसंद ईदी पाकर बच्चे बहुत खुश होते हैं। ईद उल फित्र को **मीठी ईद** भी कहते हैं क्योंकि इस दिन खासतौर पर सिंवई और ज़र्दा बनाया जाता है और पड़ोसियों व अपने दोस्तों को खिलाया जाता है।

ईद उल फित्र पर गरीबों को दान दिया जाता है। इसे **फितरा** कहते हैं। फितरा में एक व्यक्ति की तरफ से कम से कम पौने दो किलो गेहूँ या उसकी कीमत के बराबर का दान दिया जाता है। जिस परिवार में जितने सदस्य होते हैं, उतना अनाज या उसकी कीमत दान की जाती है।

क्यूँ और कब मनाई जाती है ईदुज़्ज़ुहा

इसे बकरीद भी कहते हैं। चाँद के महीनों के हिसाब से बारह महीनों में जो आखिरी महीना पड़ता है, उसका नाम है - **ज़ुल हिज्ज**। ज़ुल हिज्ज यानि हज वाला महीना। हज वाले महीने की दसवीं तारीख को **ईदज़्ज़ुहा** मनाई जाती है। इस महीने में लोग हज करने और ईद मनाने मक्का-मदीना जाते हैं। जो नहीं जाते वे घर में ही रहकर धूमधाम से ईद का त्यौहार मनाते हैं।

ईदुज़्ज़ुहा को मनाने के पीछे पैगम्बर इब्राहिम की कहानी है। ईसा के जन्म के करीब ढाई हज़ार साल पहले इब्राहिम का जन्म मेसोपोटामिया के 'उर' नाम की जगह पर हुआ था। इब्राहिम से प्रभावित होकर मिस्त्र के राजा ने अपनी बेटी **हाजरा** की शादी उनसे की थी। एक बार इब्राहिम को सपना आया कि वे अपने सबसे छोटे बेटे इस्माइल की कुर्बानी दें। जब इब्राहिम ने इस्माईल से पूछा, वह कुर्बानी के लिए खुशी-खुशी तैयार था। इब्राहिम इस्माइल को मीना (जो मक्का में है) की पहाड़ी पर ले गए और एक शिला पर लिटाकर उसकी कुर्बानी देने लगे। तभी आसमान से एक फरिश्ता उतरा। उसने कहा कि तुम्हारी कुर्बानी कुबूल हुई। वहाँ एक भेड़ सामने आ गई थी। फरिश्ते के कहने पर इब्राहिम ने बच्चे की जगह भेड़ की कुर्बानी दी। इसलिए इब्राहिम की याद में इदुज़्ज़ुहा के दिन कुर्बानी दी जाती है।

कैलण्डर

चाँद के हिसाब से बारह महीने

1. मुहर्रम	2. सफ़र	3. रबी उल अव्वल	4. रबी उल अस्सानी
5. जुमादी अल अव्वल	6. जुमादी अस्सानी	7. रजब	8. शाबान
9. रमज़ान	10. शव्वाल	11. ज़ुल क़ादा	12. ज़ुल हज्ज

प्रयोग



ज़रूरी चीज़ें

एक बड़ा गुब्बारा और

एक चवन्नी

- गुब्बारे के अन्दर चवन्नी डालो।



- अब गुब्बारे को फुला लो। जब अच्छी तरह फूल जाए तो उसका मुँह धागे से कसकर बाँध दो।



- अब गुब्बारे को पकड़कर ऐसे हिलाना है कि सिक्का गोलाकार में घूमने लगे।
- ऐसा करने के लिए तुम्हें गुब्बारे को एक छोटे-से गोले में बहुत तेज़ी से गोल-गोल घुमाना पड़ेगा। ज़रा करके देखो!
- गुब्बारे को घुमाना अगर अचानक बंद कर दें तो क्या तब भी सिक्का घूमता रहेगा?

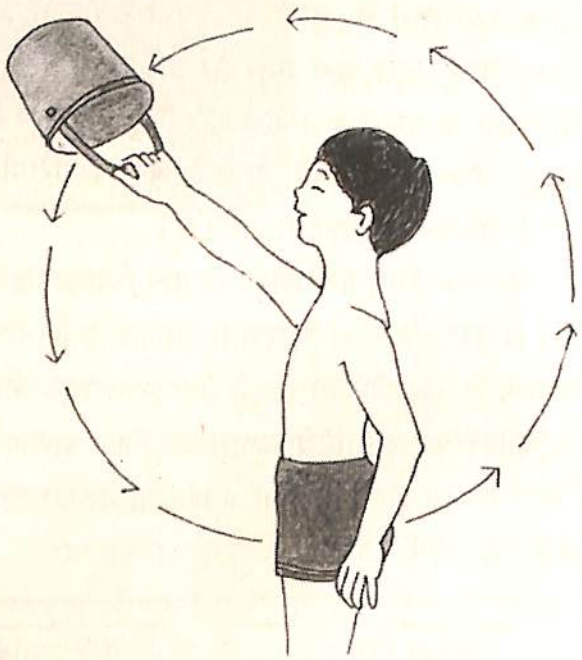


ज़रूरी चीज़ें

एक बाल्टी और

5-6 लीटर पानी

- एक छोटी बाल्टी ले लो, जिसमें छह-सात लीटर पानी आता हो।
- इस बाल्टी को आधा भर लो।
- बाल्टी को एक बड़े चक्कर में घुमाने की कोशिश करो।
- इसके लिए अच्छा रहेगा तुम पहले खाली बाल्टी घुमाकर अभ्यास कर लो।

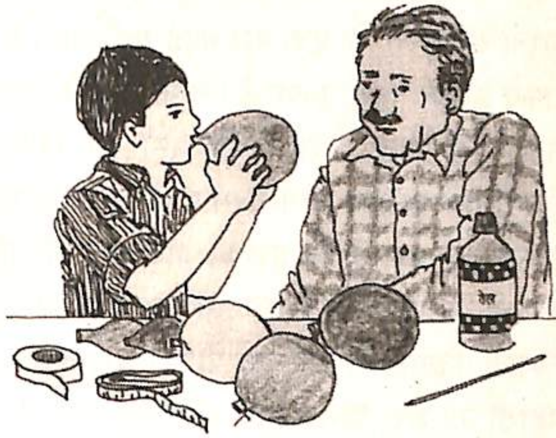


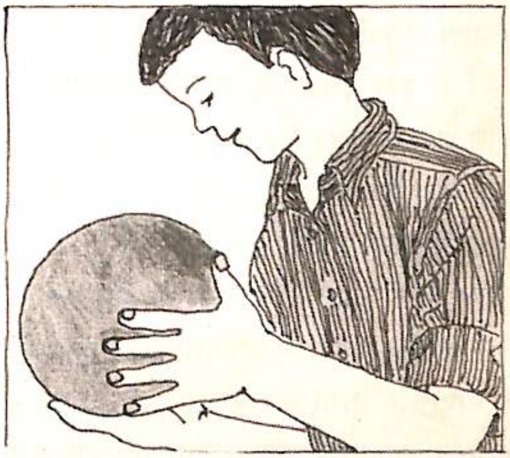
ज़रा से अभ्यास के बाद तुम बाल्टी को ऐसे घुमा सकोगे कि बाल्टी औंधी, उलटी होने की स्थिति में भी पानी नहीं गिरेगा।

तुम्हें क्या लगता है, ऐसा क्यों होता है? क्या तुमने ऐसी किसी चीज़ के बारे में कहीं पढ़ा-सुना है?

ज़रूरी चीज़ें	❑ गोल आकार में फूलने वाले कुछ गुब्बारे ❑ ऊन से बुनाई करने वाली सलाइयाँ और ❑ थोड़ा-सा खाने का तेल।

- कुछ गुब्बारे इस तरह फुलाओ कि उनमें थोड़ी जगह बची रहे।
- अब इन अधफूले गुब्बारों को धागे से कसकर इस तरह बाँध दो ताकि हवा न निकल पाए।
- गुब्बारे को ध्यान से देखो। गुब्बारे के मुँह के पास का रंग गाढ़ा दिखेगा जबकि उसका पेट कुछ हल्के रंग का होगा।
- पेट का कुछ हिस्सा जो कम खिंच/तन रहा होगा वहाँ भी रंग कुछ गाढ़ा होगा।
- सलाई के नुकीले सिरे पर तेल मल दो।
- अब इस सिरे को गुब्बारे में उस हिस्से पर चुभाना है जहाँ गुब्बारे का रंग गहरा हो।
- आहिस्ता से सलाई को आगे बढ़ाना है और इस नुकीले सिरे को दूसरी तरफ के गहरे रंग वाले हिस्से से निकालना है।







हो सकता है एक-दो बार सलाई चुभाते वक्त गुब्बारा फूट जाए। ऐसे में तुम सलाई की नोंक पर थोड़ा-सा तेल और मलना और फिर कोशिश करना।

तुम देखोगे कि सलाई की नोक से गुब्बारे की दोनों परतें छेदने के बाद भी गुब्बारा फूटता नहीं है। ऐसा क्यों होता है?



भोपाल का राष्ट्रीय उद्यान वन विहार

भोपाल मध्यप्रदेश का एक खूबसूरत शहर है। इतना खूबसूरत कि एक बार कोई यहाँ आता है तो सालों इसकी चर्चा करता है। कभी यहाँ के तालाब उसे याद आते हैं तो कभी यहाँ की मस्ज़िदें, सँकरी गलियाँ और नरम-नरम पहाड़ियाँ। यह शहर इतना हरा-भरा है कि इसकी याद आते ही आँखें हरी हो जाती हैं। इसी शहर में एक बड़ी झील है। जिसके किनारे-किनारे एक पहाड़ी चलती है। इस पहाड़ी पर शेर, बाघ, तेंदुए से लेकर भालू, हिरन और नीलगायों के बसेरे हैं। लाखों पेड़ हैं। जिन पर हज़ारों पंछियों ने अपने-अपने घोंसले बना रक्खे हैं।

हम दरअसल भोपाल के प्राणी उद्यान की बात कर रहे हैं। इसका नाम है वन विहार। यह एक राष्ट्रीय उद्यान है जो 445 हैक्टर में फैला हुआ है। यह उद्यान 26 जनवरी 1983 में तैयार होना शुरू हुआ। इस उद्यान को इस उद्देश्य से बनाया कि यहाँ वन्य प्राणियों को प्राकृतिक रहवास में संरक्षित किया जा सके। इस उद्यान में बीमार, घायल, कमज़ोर और भटक गए जानवरों को भी रखा जाता है। यहाँ जानवरों से संबंधित अनुसंधान भी होते हैं। इस उद्यान में एक तरफ झील के पाँच किलोमीटर लम्बे किनारे पर पेड़-पौधों के झुण्ड हैं तो दूसरी तरफ हरी-भरी पहाड़ी है। इसी पहाड़ी पर बने अलग-अलग बाड़ों में तरह-तरह के जानवर रहते हैं। एक-एक बाड़ा कई एकड़ों ज़मीन में फैला हुआ है। एक पतली-सी जाली के पार नजदीकी से तुम दर्ज़नों जीवों को देख सकते हो। इसमें भालू, शेर, सफेद भालू, सफेद बाघ, कछुआ, मगर, घड़ियाल तथा तरह-तरह के साँपों को रखा गया है। शुक्रवार तथा पाँच-छह अन्य अवकाशों के अलावा रोज़ शाम को पर्यटक यहाँ घूमने आ सकते हैं। विश्व पर्यावरण दिवस यानी पाँच जून, 21मार्च, 1जुलाई, 2 से 8अक्टूबर (वन्य प्राणी संरक्षण सप्ताह), 26 जनवरी, पंद्रह अगस्त, 1 नवम्बर और 29 दिसम्बर को प्रवेश निशुल्क होता है। आम दिनों में वन विहार घूमने पर दस रुपए प्रति व्यक्ति के हिसाब से शुल्क लगता है।

वन विहार में इसके अलावा भी बहुत कुछ है। विहार वीथिका पर्यटकों के लिए हमेशा आकर्षण का केन्द्र रही है। इस वीथिका में विभिन्न पक्षियों, जीवों इत्यादि से संबंधित छायाचित्र, मॉडल वगैरह उपलब्ध रहते हैं। विहार वीथिका के एक हिस्से में वन्य जीवन पर आधारित फिल्में दिखाई जाती हैं। इसके अलावा बच्चों की कई गतिविधियाँ यहाँ नियमित रूप से हुआ करती हैं।

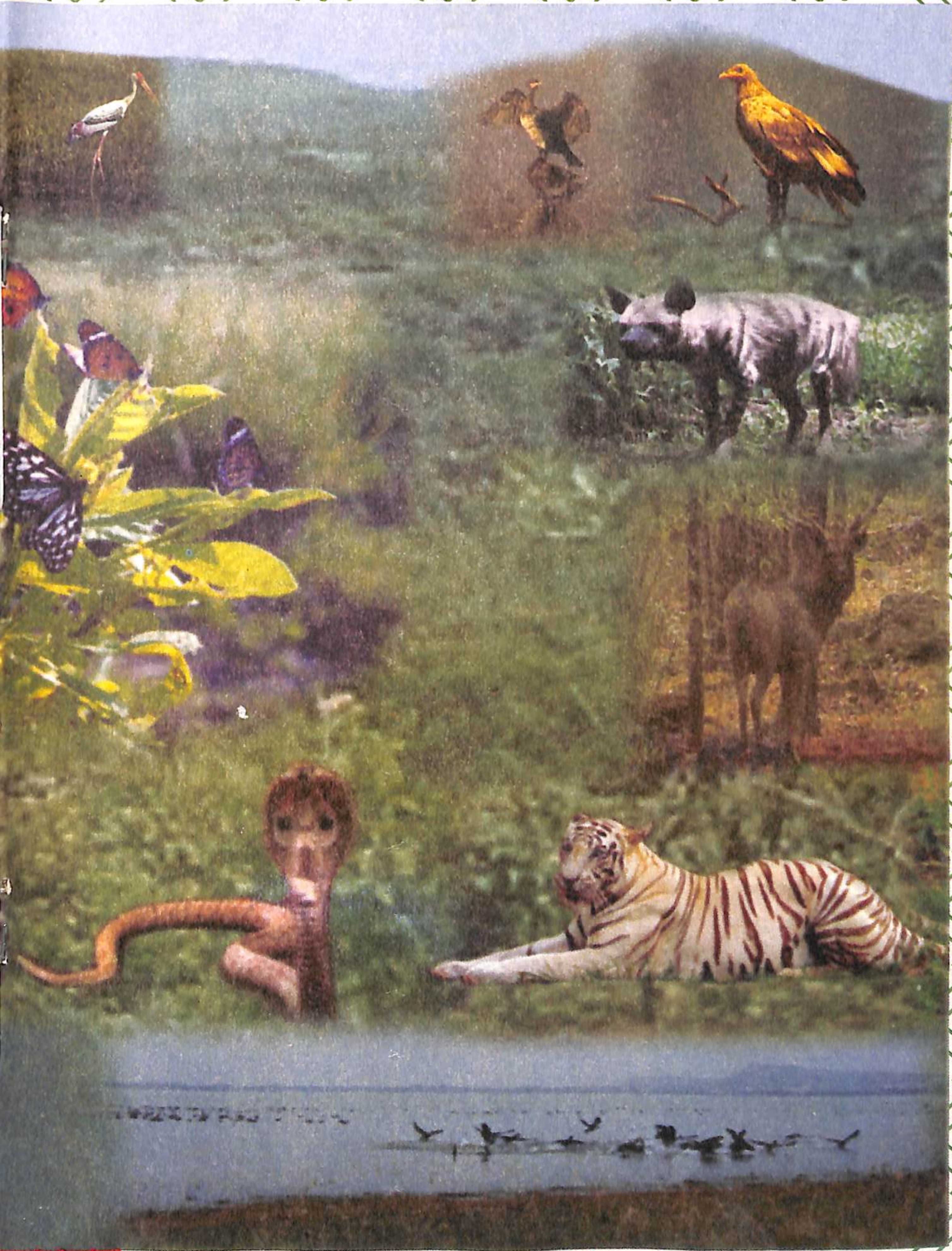


वन विहार के बारे में और जानकारी के लिए तुम - संचालक एवं वन संरक्षक, वनविहार नेशनल पार्क, भोपाल, पोस्ट बॉक्स नम्बर- 348, सेन्ट्रल टी टी नगर, भोपाल-3, को लिख सकते हो या 0755-2770774 पर संपर्क कर सकते हो। ●





वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल के सौजन्य से



सुडोकू

सुडोकू एक अंक पहेली है। इसमें 9 x 9 यानी कुल 81 खाने होते हैं। जिसमें 3 x 3 खानों का एक खण्ड बनता है। इसे इलाका भी कहते हैं। एक सुडोकू में इस तरह के 9 इलाके होते हैं।

हर खाली खाने में 1 से 9 तक के अंक भरने होते हैं। हाँ, लेकिन यहाँ एक शर्त है। आपको यह ध्यान रखना होगा कि किसी भी आड़ी लाइन, खड़ी लाइन या इलाके में 1 से 9 तक के सारे अंक केवल एक ही बार आना चाहिए।

2	8	4	9	3	7	6	1	5
6				4				9
1	5	9	8	2	6	3	4	7
5				6				8
3				9				1
9	7	8	5	1	3	2	6	4
8				5				2
5		7			2			4
1	3	9	8	4	7	5	2	6

सही उत्तर भेजने पर चकमक का एक अंक मुफ्त दिया जाएगा।



बत्ती बदल गई

पोइली सेनगुप्ता
अनुवाद - मीरा कांत

मैं तो बस मज़ाक कर रहा था। जनपथ के चौराहे पर अखबार बेचने वाले फटेहाल लड़के के साथ ज़रा-सा मज़ाक। जब भी मैं अपनी साइकिल पर वहाँ से गुज़रता, वह हाथ में अंग्रेज़ी का अखबार थामे मेरे पीछे दौड़ता। और ज़ोर-ज़ोर से - कुछ हिन्दी कुछ अंग्रेज़ी में - चीख कर शाम की ताज़ा खबरों की सुर्खियाँ सुनाता।

इस बार मैं फुटपाथ पर रुका और उससे हिन्दी का अखबार माँगा। उसका मुँह खुला का खुला रह गया। "मतलब... मतलब आप हिन्दी जानते हैं?" उसने पूछा। "हाँ, हाँ, क्यों नहीं।" अखबार के पैसे चुकाते हुए मैंने कहा। "क्यों भाई, तुमने क्या सोचा था?"



कुछ ठहर कर उसने जवाब दिया, "मगर... मगर आप तो बिल्कुल अंग्रेज़ लगते हैं। फिर आगे बोला, "मतलब आप हिन्दी पढ़ भी सकते हैं?"

"हाँ हाँ, बिल्कुल पढ़ सकता हूँ।" इस बार मैंने कुछ बेसब्री से कहा। "मैं हिन्दी बोल सकता हूँ, पढ़ सकता हूँ और लिख भी सकता हूँ। स्कूल में हिन्दी मेरा एक सब्जेक्ट भी है।"

"सब्जेक्ट क्या?" उसने पूछा। जो कभी विद्यालय गया ही न हो उसे मैं कैसे समझाता कि सब्जेक्ट क्या होता है। फिर भी मैंने कोशिश की। "सब्जेक्ट होता है...।" मगर लाल बत्ती हरी हो चुकी थी और मेरे पीछे भोंपू की आवाज़ें बढ़ती जा रही थीं। मैं ट्रैफिक के साथ आगे बह गया।

अगले दिन वह फिर वहाँ था। मुझे देखकर मुस्कराया और हिन्दी का अखबार बढ़ाते हुए उसने कहा, "आपका अखबार। अब बताइए, ये सब्जेक्ट क्या चीज़ है?" अंग्रेज़ी का यह शब्द उसकी ज़बान पर कुछ अजीब सा लगा।

"अरे, जो-जो पढ़ते हैं वही सब्जेक्ट होता है," मैंने कहा। लाल बत्ती जारी थी सो पूछा, "क्या तुम कभी स्कूल नहीं गए?"

"कभी नहीं," उसने जवाब दिया। मेरी साइकिल की गद्दी की ओर इशारा करते हुए उसने गर्व से बताया,

"जब मैं इतना-सा था तभी से काम कर रहा हूँ।" फिर आगे बोला, "पहले मेरे साथ मेरी माँ आया करती थी। मगर अब तो मैं अकेले ही ये काम कर सकता हूँ।"

"तुम्हारी माँ अब कहाँ है?" मैंने पूछा। पर तभी बत्ती बदल गई और मुझे आगे बढ़ना पड़ा। कहीं पीछे से उसकी आवाज़ सुनाई दी, "वह मेरठ में है... मेरे....।" बाकी शब्द शोर में डूब गए।

"मेरा नाम समीर है," अगले दिन उसने कहा। फिर शरमाते हुए मुझसे पूछा, "आपका नाम क्या है?"

"कैसी गज़ब की बात!" मेरी साइकिल डगमगा गई। मैंने कहा, "मेरा नाम भी समीर है।"

"क्या?" उसकी आँखों में एक चमक-सी कौंध गई।

"हाँ," मैं मुस्करा कर बोला। "जानते हो? यह हनुमान का दूसरा नाम है।"

"तो अब आप हुए समीर नम्बर एक और मैं हुआ समीर नम्बर दो," उसने जोश से कहा।

"ऐसा ही सही।" मैंने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया। "फिर मिलाओ हाथ समीर नम्बर दो।"

उसने इतने उत्साह से हाथ मिलाया कि चलते हुए उसके प्यार की गरमाहट को मैं काफी दूर तक महसूस करता रहा।

अगले दिन उसके चेहरे पर वह रोज़ वाली मुस्कान नहीं मिली। "मेरठ में बहुत गड़बड़ है," उसने कहा, "वहाँ दंगों में बहुत से मुसलमान मारे जा रहे हैं।"

मैंने अखबार की सुर्खियों को देखा। मेरठ साम्प्रदायिक दंगों से दहक रहा था।

"मगर समीर...." मैंने कुछ कहना चाहा।

"मैं मुस्लिम समीर हूँ," वह फिर बोला। "मेरे परिवार के सभी लोग मेरठ में हैं।" उसकी आँखों में पानी भर आया। मैंने उसका कंधा थामा तो भी उसने नज़र नहीं उठाई।

अगले दिन वह चौराहे पर नहीं था। न ही उससे अगले दिन और न ही फिर कभी। और कोई भी अखबार - न अंग्रेज़ी, न हिन्दी - मुझे यह बता पाया कि मेरा समीर नम्बर दो आखिर गया कहाँ। ❋

अक्टूबर 2005 का सुडोकू हल

7	5	3	1	9	6	4	8	2
8	9	6	2	5	4	1	7	3
4	1	2	7	3	8	6	5	9
3	8	5	4	2	1	9	6	7
6	2	4	5	7	9	3	1	8
9	7	1	6	8	3	2	4	5
2	4	8	3	6	5	7	9	1
5	6	7	9	1	2	8	3	4
1	3	9	8	4	7	5	2	6

अक्टूबर 2005 का चित्रपहेली हल

1 तु	ल	2 सी		3 म	यू	4 र	पं	5 ख
ल		6 पि	या	नो		ज		च्च
7 सी	ढ़ि	याँ		र		8 क	9 ने	र
दा				थ			ब	
10 स	11 ला	ई	याँ		12 प्र	ह	ला	13 द
	हौ			14 गु				ला
15 कु	र	16 ता		ठ		17 क	न्हा	ई
ट		री		18 बा	द	ल		ला
19 क	न	ख	जू	रा		20 म	ज	मा

चट्टान से मिलते संकेत

पेरिस की सड़कों से घर लौटती मेरी ठण्ड से काँप रही थी। बर्फीली हवा चल रही थी, लेकिन मारी की छोटी-सी प्रयोगशाला में भी कम ठण्डक नहीं थी।

दरअसल उसका दिमाग कहीं और था। उस दिन - और यह 6 फरवरी, 1898 का दिन था - मारी ने जो प्रयोग पूरा किया था और लिखा था, वह उसे समझ में नहीं आ रहा था। वह कोई एक दर्जन बार यह प्रयोग कर चुकी थी और हर बार यही परिणाम आ रहा था। क्यों?

मारी चट्टान के एक टुकड़े का विश्लेषण कर रही थी - और उसमें से ऊर्जा की किरणें निकल रही थीं। मारी जानती थी कि यूरेनियम नाम का एक पदार्थ होता है जो इसी तरह ऊर्जा की किरणें छोड़ता है। थोरियम भी ऐसी ही कुछ रहस्यमयी किरणें छोड़ता है।

ये किरणें एक संकेत की तरह होती हैं। मारी जानती थी कि यदि कोई चट्टान ऐसी किरणें छोड़े तो ज़रूर उसमें यूरेनियम या थोरियम होगा। लेकिन उसकी प्रयोगशाला में चट्टान का जो टुकड़ा था वह कुछ अलग ही था। वह ज़्यादा शक्तिशाली किरणें फेंक रहा था। यूरेनियम-थोरियम दोनों से भी ज़्यादा शक्तिशाली। फिर यह क्या हो सकता है?

मारी घर पहुँची, तब भी वह इसी बारे में सोच रही थी।



"कुछ गड़बड़ है" मारी ने अपने पति पियरे से कहा।

"क्या गड़बड़ है?"

"हो सकता है मैं एक ही गलती बार-बार कर रही होऊँ। या हो सकता है प्रयोगशाला की ठण्डक में अपने उपकरण ठीक से काम नहीं कर रहे हों। या...."

"हाँ बोलो"

"कहीं उस चट्टान में कोई ऐसा तत्व तो नहीं छिपा जिसके बारे में हम नहीं जानते?"

"तुम्हारा मतलब कोई नया तत्व, जिसके बारे में कोई नहीं जानता?"

"हाँ। नया तत्व!"

जैसे-जैसे पति-पत्नी बात करते गए, मारी का यह विश्वास पक्का होता गया कि ज़रूर उस चट्टान में कोई नया तत्व छिपा हुआ है।

लेकिन इस तरह की चट्टानों पर काम तो दुनिया के बहुत-से वैज्ञानिक करते रहे हैं। यदि कोई नया तत्व होता तो उन्हें मिला नहीं होता?

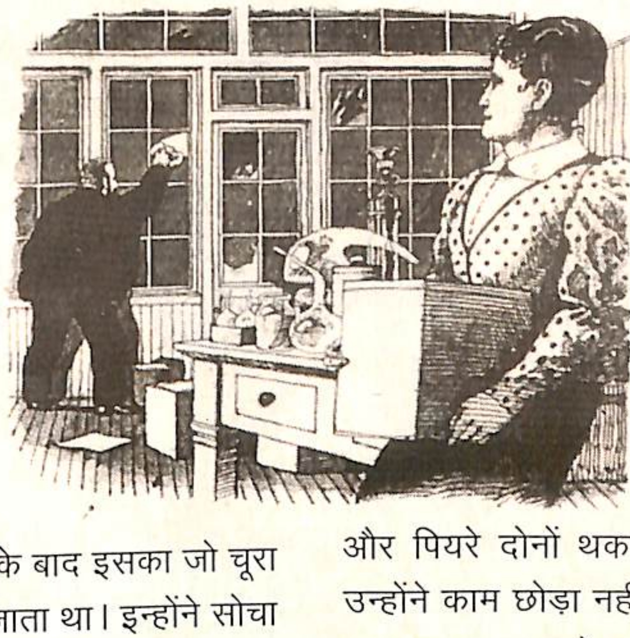
दोनों काम में जुट गए।

उनका पहला काम ऐसी चट्टान चुनना था जिससे सबसे ज़्यादा संकेत मिल रहे हों। अनेक प्रयोगों के बाद उन्होंने **पिचब्लेण्ड** नामक एक चट्टान को चुना जिसमें यूरेनियम होता है,

लेकिन जो इस समय यूरेनियम की किरणों से चार गुना तगड़ी किरणें छोड़ रही थी।

पियरे और मारी ने पिचब्लेण्ड पर प्रयोग शुरू किया। प्रयोग करते हुए उन्हें पता लगा कि इसमें एक नहीं, बल्कि दो नए तत्व हैं। जुलाई 1898 तक मारी इनमें से एक के बारे में इतना जान चुकी थी कि अब उसकी घोषणा की जा सकती थी। मारी पोलेण्ड की थीं इसलिए उन्होंने इसका नाम रखा - पोलोनियम।

लेकिन दूसरे तत्व के साथ समस्या थी। वह अब भी छिपा हुआ था। चट्टान में इसकी मात्रा इतनी कम थी कि इसकी थोड़ी-बहुत मात्रा पाने के लिए भी उन्हें टनों चट्टानें तोड़ना पड़तीं।



यूरेनियम के कारण पिचब्लेण्ड काफी महँगा था। इसकी ज़्यादा मात्रा वे नहीं खरीद सकते थे। लेकिन यूरेनियम निकालने के बाद इसका जो चूरा बचता था उसे फेंक दिया जाता था। इन्होंने सोचा क्यों न यह चूरा कहीं से खरीद लिया जाए।

एक दोस्त की मदद से एक खान कम्पनी के साथ बात तय हुई। उन्होंने कहा आप जितना चाहें चूरा हमसे ले सकते हैं, पर ले जाने का खर्च आपको ही उठाना पड़ेगा।

अब समस्या यह आई कि चट्टान के चूरे की इस भारी मात्रा को रखेंगे कहाँ? विश्वविद्यालय में पूछा, जहाँ मारी पढ़ी थी - लेकिन वहाँ तो एक कोना भी खाली नहीं था।

आखिर एक स्कूल के टिनशेड में आने वाले माल को रखने का निश्चय किया गया। अब समस्या यह थी कि इसकी छत काँच की थी। गरमी में खूब गर्मी हो जाती, सर्दी में भयंकर ठण्डक और बरसात में सारा टिनशेड टपकने लगता। लेकिन क्या करें? इसी से काम चलाना पड़ेगा।

तो जब पत्थर के काले भूरे-चूरे से भरी बोरियों से लदी हुई घोड़ागाड़ियाँ पहुँचीं, दोनों उन्हें देखने बाहर सड़क पर निकल आए।

मारी ने पिचब्लेण्ड के चूरे के साथ प्रयोग करना शुरू किया। उसमें बड़े-बड़े मर्तबानों से विभिन्न रसायन डालकर मिलाना और चूल्हे पर उबालना। भीतर काम करना खतरनाक था, इसलिए वह अपना चूल्हा बाहर उठा लाई और अपने कद से भी लम्बी लोहे की सलाख से बड़े-बड़े बरतनों में चूरे का रासायनिक घोल उबालती रही। यह क्रम महीनों चलता रहा।

काम कठिन था। मारी और पियरे दोनों थककर चूर हो जाते। लेकिन उन्होंने काम छोड़ा नहीं। वे सफलता की दिशा में एक-एक कदम आगे बढ़ रहे थे। नए तत्व की खोज होने जा रही थी। चट्टान के संकेत तीव्र होते जा रहे थे। हर बार फालतू चूरा हट रहा था और रेडियम की मात्रा बढ़ती जा रही थी।

काम के रसायनों को भीतर रख लिया गया। लेकिन बाधाएँ आती रहीं। कभी गर्मी खेल बिगाड़ देती, कभी भयंकर सर्दी और कभी तेज़ हवाएँ। टूटी हुई छत से धूल-मिट्टी गिरती और सब कुछ फिर नए सिरे से शुरू करना पड़ता।

एक दिन मारी ने अपने पति से पूछा- "पियरे!

मारी क्यूरी का जन्म 7 नवंबर 1867 को वारसा (पोलेण्ड) में हुआ था। उनके पिता प्रोफेसर थे। राजनीतिक कारणों से उन्हें देश छोड़ना पड़ा। वह सोरबोर्न आ गईं जहाँ एक प्रयोगशाला में उन्हें वैज्ञानिक उपकरण धोने का काम मिल गया। यहीं उन्हें पियरे क्यूरी मिले जिनसे उन्होंने विवाह कर लिया। उन्होंने पता लगाया कि रेडियम ऐसी किरणें छोड़ता है जो उन धातुओं को भी पार कर जाती हैं जिन्हें प्रकाश की किरणें पार नहीं कर पातीं। इस खोज के लिए 1903 में उन्हें नोबल पुरस्कार मिला। 1906 में एक सड़क दुर्घटना में पियरे की मृत्यु हो गई। मारी ने अपना काम जारी रखा। 1911 में उन्हें रसायनशास्त्र में उनके योगदान के लिए दोबारा नोबल पुरस्कार दिया गया। लगातार खतरनाक रसायनों के बीच काम करने से उन्हें कैंसर हो गया और 1934 में उनकी मृत्यु हो गई।

तुम क्या सोचते हो? रेडियम दिखने में कैसा होगा?"

"पता नहीं। पर मैं चाहता हूँ उसका कोई सुन्दर-सा रंग हो।"

आखिर चार साल की कड़ी मेहनत के बाद उन्होंने रेडियम को खोज ही लिया। एक ऐसी चीज़ को - जिसे आज से पहले किसी ने नहीं देखा था।

उस रात मारी ने अपने पति को आधी रात को नींद से जगाया और बोली "सुनो! उस जार को वहाँ छोड़ना शायद ठीक नहीं है जिसमें रेडियम रखा है। इतनी मेहनत से हमने उसे पाया है और इसमें हमारा इतना समय लगा है। क्यों न हम उसे घर ले आएँ।"



पति ने कहा "ठीक है।" दोनों देर रात अपनी प्रयोगशाला पहुँचे। अँधेरी रात थी। इमारत सुनसान पड़ी थी। दोनों बरामदा पार कर टिन शेड तक पहुँचे। पति ने ताला खोला। अचानक उसने कुछ चमत्कार जैसा देखा। फुसफुसाकर बोला- "मारी! लेम्प मत जलाओ। देखो!" मारी ने अँधेरे में भीतर देखा तो देखती रह गई। रेडियम वाला जार ऐसे चमक रहा था जैसे उसमें किसी ने हज़ारों जुगनू भर दिए हों। आह! हल्की हरी और चमकदार वह रोशनी! जी करता था देखते ही रहें।

अभी बहुत काम बाकी था। लेकिन मारी को लगा उसकी सारी मेहनत सफल हो गई। दुनिया को एक नए तत्व का पता चला गया जिसका नाम है - रेडियम। ●

रेडियम

रेडियम एक दुर्लभ रासायनिक तत्व है जो यूरेनियम के खनिज में पाया जाता है। लेकिन बेहद कम मात्रा में। यूरेनियम के 30 लाख भाग में एक भाग रेडियम होता है। रेडियम एक रेडियोसक्रिय पदार्थ है और इसका उपयोग मुख्यतः कैंसर के इलाज में किया जाता है। इसके अलावा इसका उपयोग खुद चमकने वाले रंग बनाने में, खनन उद्योग में और परमाणु ऊर्जा में भी होता है।

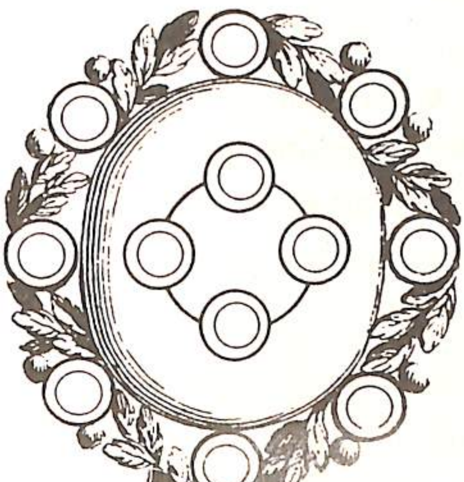


माथा पच्ची

1

चॉकलेट बनाने वाली एक कम्पनी ने बच्चों को एक प्रस्ताव दिया। प्रस्ताव यह था कि अगर कोई चॉकलेट की आठ पन्नियाँ (रैपर) जुटा ले तो उसे एक चॉकलेट मुफ्त मिलेगी।
एक बच्चे ने 71 पन्नियाँ जुटा लीं।
उसे कितनी चॉकलेट मुफ्त मिलेंगी?

2



इस चित्र में आठ गोलों के भीतर चार गोलों की ज़ंजीर है।
तुम्हें इन गोलों में 1 से 12 तक के अंक भरने हैं। हाँ, पर एक शर्त भी है। शर्त यह है कि अंदर के चार गोलों में भरे अंकों का जोड़ बाहर बने 8 गोलों के अंकों के जोड़ का आधा हो।

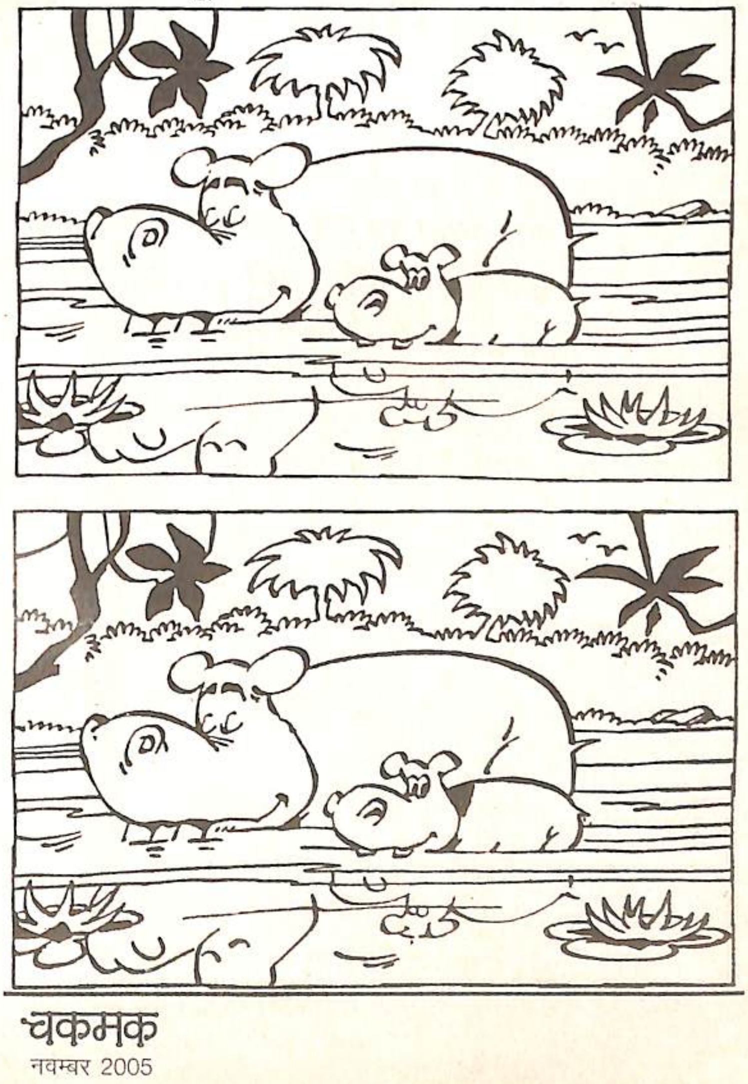
3

1	5	24
9	7	40
2	2	2
6	4	10
7	5	18
5	3	

इन खानों के बीच आपस में एक सम्बन्ध है। बस तुम्हें उसी सम्बन्ध का पता लगाना है। यह पता चलने के बाद ये तो पता चल ही जाएगा कि खाली खाने में कौन-सी संख्या आएगी?

4

अंतर ढूँढो





सौन्दर्य की नदी नर्मदा

अमृतलाल वेगड़

इस बार पुस्तक अंश के अन्तर्गत अमृतलाल वेगड़ की पुस्तक सौन्दर्य की नदी नर्मदा का एक रोचक अंश प्रस्तुत है। श्री वेगड़ प्रसिद्ध चित्रकार हैं और उन्होंने नर्मदा नदी पर तीन पुस्तकें लिखी हैं जिनकी बड़ी प्रशंसा हुई है। यहाँ जो चित्र तुम देखोगे वे भी श्री वेगड़ के ही बनाए हुए हैं।

नर्मदा सौन्दर्य की नदी है। यह नदी वनों, पहाड़ों और घाटियों में से बहती है। मैदान इसके हिस्से में कम ही आया है। सीधा-सपाट बहना तो यह जानती ही नहीं। यह चलती है इतराती, बल खाती, वन-प्रांतरों में लुकती-छिपती चट्टानों को तराशती, डग-डग पर सौन्दर्य की सृष्टि करती, पग-पग पर सुषमा बिखेरती!

नर्मदा मुझे बचपन से ही खींचती रही है। उसके विविध रूप देखने मैं सुदूर देहातों में गया हूँ। उसकी शोभा को मुग्ध होकर निहारता रहा हूँ। लेकिन तृप्ति कहाँ! परकम्मावासियों को देखकर हर बार मन ललक उठता। सोचता, अपनी स्केच-बुक लेकर क्यों न इनके साथ हो लूँ। लेकिन बात बनती नहीं थी।

किन्तु, एक दिन बात बन ही गई। मेरे सहयोगी पांडेजी जबलपुर से मंडला तक की नर्मदा-तट की पदयात्रा के लिए तैयार हो गए। अब हम तीसरे साथी को तलाशने लगे। जिससे पूछते, वही हँसता। कहता- वसीयतानामा लिखकर जाना। कोई कहता- साथ में गधा ज़रूर ले जाना। बोझा ढोने के काम आएगा, सवारी का काम भी देगा।

कोई सहयोग को तैयार नहीं हुआ। लेकिन

हमारे दो छात्र खुशी-खुशी तैयार हो गए- यादवेन्द्र और सूर्यकान्त। तय हुआ कि दशहरा मनाकर दूसरे दिन सबेरे चलेंगे। यात्रा ग्वारीघाट से शुरू होगी।

22 अक्टूबर 1977 की सुबह हम चारों ग्वारीघाट से, पीठ पर बोझा लादे, नर्मदे हर! के घोष के साथ चल पड़े।

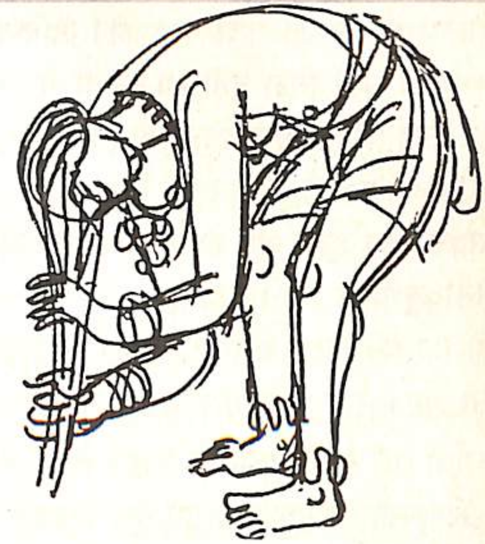
तीसरे पहर छतरपुर गाँव पहुँचे। रात को एक ग्रामीण के बरामदे में जब सोये, तब टाँगें तो दुख ही रहीं थीं। ऐसा लग रहा था मानो कंधे जड़ से उखड़ जाएँगे। फिर भी नींद बहुत अच्छी आई।

सबेरे आगे बढ़े। बरसात अभी-अभी खत्म हुई थी। कई जगह दलदल था और पैर फिसलते थे। एक गाँव में एक ग्रामीण के घर सुस्ताने बैठे। मेरा ध्यान उसके घर की दीवारों पर गया। दीवाली की लिपाई-पुताई हो चुकी थी। उसकी स्त्री ने दीवार पर बेल-बूटे निकाले थे। मैंने उससे कहा, "मोर बढ़िया बना है। रंग भी बहुत अच्छे हुए हैं।"

उसने लज्जित पर साथ ही उत्साहित होते हुए कहा, "यहाँ देखिए, कुछ यहाँ भी बने हैं।" बाद में पांडेजी ने बताया, आपकी प्रशंसा से वह बहुत खुश हुई थी। पुलक भरे स्वर में अपनी सहेली से कह रही थी, इन लोगों को मेरे बेल-बूटे बहुत अच्छे लगे।

शाम को बिजौरा पहुँचे। उस पार है बरगी कालोनी। यहाँ नर्मदा पर बड़ा बाँध बनाया जा रहा है। बाँध की गहरी खाई-सी नीव में उतर कर ही हम बिजौरा पहुँच सके थे। सोने के लिए पाठशाला मिल गई। एक कमरे की पाठशाला। चौकठ में दरवाज़ा नहीं था। मेरा बिस्तर वहीं था। पांडेजी कहने लगे, "बघेरा आएगा, तो पहला शिकार आप होंगे।"

बहुत दुबला हूँ। गिनी-चुनी हड्डियाँ भर हैं मेरे शरीर में। कहता हूँ, "बेचारे को प्रथम ग्रासे मक्षिकापात



(पहले ही कौल में मक्खी गिरना) होगा, पर हाँ, जब तुम्हारे पास आएगा, तब मधुरेण समापयेत (मधुर समाप्ति) होगा!"

सुबह नारंगी रंग का बड़ा भारी सूरज निकला। निकला नहीं उगा- पौधा जैसे धरती में से उगता है। ताज़ा जन्मा सूरज नवजात शिशु-सा नरम और कोमल लग रहा था।

※ ※ ※

कुछ आगे बढ़े तो सागौन का घना जंगल शुरू हो गया। फिर पहाड़ की चढ़ाई। पहाड़ को लाँघने में हाँफ गए लेकिन मज़ा भी कम नहीं आया।

कभी पहाड़ी पर चढ़ाती, कभी खड्ड में उतारती, कभी झाड़-झंखाड़ से उलझाती तो कभी छोटे-छोटे झरनों में उतारती हमारी पगडंडी हमें एक ऐसे स्थान पर ले आई, जिसे देखकर हम मारे खुशी के झूम उठे।

सामने एक नन्ही नदी थी। इसमें छोटे-छोटे ढेर सारे प्रपातों की पंगतें लगी थीं। इन्हें देखकर आँखें पलक झपकाना भूल गईं। कान निनाद सुनने में मगन हो गए। समाधि-सी लग गई। लेकिन बुद्धि जिसका नाम! न जाने बरहइयाखेड़ा कितने दूर हो। उठो, चलो!

उठना पड़ा। नदी पार की। लेकिन उस पार पगडंडी नहीं मिल रही थी। नदी में आकर मानो घुल गई थी। बड़ी मुश्किल से मिली। तेज़ी से आगे बढ़े। अँधेरा होते-होते पटेल के घर पहुँचे। पटेल तो बाहर गया हुआ था, लेकिन घर के लोगों ने हमें बड़ी खुशी से अपने यहाँ ठहरा लिया। थककर चूर हो गए थे। खाना बनाया, खाया और घोड़े बेचकर सो गए। सुबह उठकर देखा, घना कोहरा था। नर्मदा तट गए। घटाटोप कोहरे के कारण आकाश और धरती एकाकार हो गए थे। आकाश मानो धरती पर उतर आया था। कोई घण्टे भर बाद कोहरा छँटा, लेकिन नदी अभी भी स्पष्ट नहीं हुई थी, क्योंकि नदी में से भाप उठ रही थी। मैंने देखा भाप सीधी नहीं उठती थी, वलयाकार उठती थी। तन्मय होकर देखता रहा और सोचता रहा, भाप सीधी भी तो उठ सकती थी। इस तरह वर्तुल में लहराती क्यों उठ रही है। भाप ही क्यों, स्वयं नर्मदा को भी तो कहीं सीधे बहते नहीं देखा। वह भी सीधी रेखा की अपेक्षा वक्रिम रेखा से चलने में ज़्यादा सौन्दर्य अनुभव करती है। यही वक्र गति-प्रियता मनुष्य में भी है। यही छंद में, रंग में, लय में, ताल में ढल कर कला बन जाती है।

कोहरे और भाव की क्रीड़ा अद्‌भुत लगी थी। कल इसे दोबारा देखेंगे। आज नहीं जाएँगे।

दोपहर को आराम कर रहे थे कि बाहर से धड़ाम की आवाज़ आई। उसी घर की एक स्त्री जंगल से लकड़ी का गट्ठर ला रही थी कि गट्ठर खम्भे से टकराकर गिर पड़ा और उस पर गिरी वह स्त्री। गिरते ही बेहोश हो गई। टाँगाटोली कर उसे घर में ले आए। एक स्त्री उस पर पंखा झलने लगी। बीच-बीच में उसे झकझोरती और ज़ोर से बुलाती, लेकिन वह होश में नहीं आई। बाहर जाते समय हम उसे एक गोली देते गए। कहा, 'होश में आने पर दे देना, शरीर का दर्द कम हो जाएगा।'

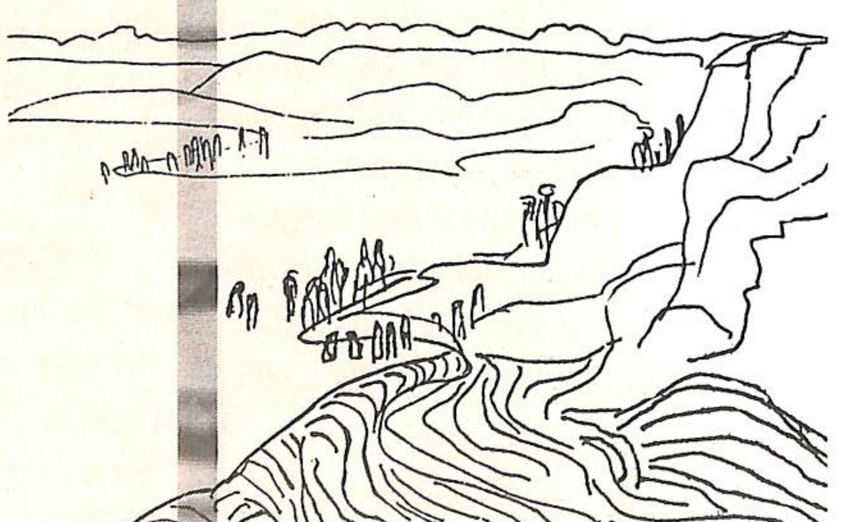
शाम को लौटते ही मैंने घर की एक स्त्री से, जो सूपे से कुछ फटक रही थी, पूछा, 'क्यों बाई, आज जो बाई गिर पड़ी थी, उसकी तबीयत कैसी है?'

वह स्त्री लजाकर मुस्कराने लगी। मैं समझा नहीं। दूसरी स्त्री ने हँसते हुए कहा, 'यही तो गिरी थी!'

मैं चकित। जो स्त्री कुछ घण्टे पहले बेहोश पड़ी थी, काम कर रही है।

घर के लोगों से घरोबा हो गया था। घर की स्त्रियों को आटा दिया तो उन्होंने रोटियाँ बना दीं। रात को सोते समय मैं सोच रहा था, कब सबेरा हो और कब भाप और कोहरे का जादू देखने मिले।

सबेरे चार बजे नींद खुल गई। ढिबरी के टिमटिमाते उजाले में स्त्रियों का कार्यकलाप शुरू हो गया। था। एक स्त्री ओखली में धान कूट रही



थी। फिर दूसरी आ गई, दोनों के मूसल बारी-बारी से चलने लगे। मैं इनकी जुगलबंदी देख ही रहा था कि एक स्त्री ने चक्की पीसना शुरू कर दिया। साथ ही वे गाती भी जा रही थीं। भोर में यह सब कितना भला लग रहा था।

※ ※ ※

हर सुबह सफर, हर शाम सफर। छेवलिया चल दिए। सरसों के पीले खेत देखकर मुझे बार-बार बसोहली शैली के चित्र याद आ जाते। इस पीतांबर धरती को मैं मुड़-मुड़ कर देखता और पीछे रह जाता।

छेवलिया के कोटवार ने बड़ी खुशी से हमें अपने घर ठहरा दिया। कहने लगा, 'आप अच्छे आए। आज शरद पूर्णिमा है। रात को नर्मदा किनारे हनुमान-चौरे पर कीर्तन-मंडली जमेगी। सारी रात भजन होंगे। आप ज़रूर आइए।'

रात को यादवेन्द्र ने खीर बनाई, शरद पूर्णिमा जो थी। खाकर सो गए। कोई ग्यारह बजे मेरी नींद खुली। यादवेन्द्र भी उठ बैठा। हम दोनों हनुमान चौरे की ओर भागे।

चाँद सोलहों कलाओं से चमक रहा था। चाँदनी कई बार देखी थी लेकिन आज पहली बार लगा कि चाँदनी में आपाद-मस्तक डूब गया हूँ। चाँदनी मेरे अंतरतम में प्रवेश कर रही है। मुझे लगा, रात भर यह ऐसी ही बरसती रही, तो सबेरे ज़मीन पर इसकी चादर बिछी मिलेगी।

इधर भजन शुरू हो गए थे। बड़ी मस्ती से गा रहे थे। कोई मृदंग बजा रहा था, कोई झाँझ-मजीरा, कोई पखावज। गा तो सभी रहे थे। यहाँ कोई निरा श्रोता नहीं था। उनकी मस्ती मुझे भी छू गई। मेरा हाथ भी उनके लय और ताल के साथ चलने लगा। मैं उनके स्केच उतारने लगा। चाँदनी ऐसी जमकर थी कि एक-एक रेखा साफ दिखाई देती थी।

रात को एक बजे लौटे। सुबह नर्मदा गए तो देखा, चाँद अभी डूबा नहीं है। मेरा ध्यान उसके धब्बों की ओर गया। मैं उन्हें गौर से देखने लगा। मुझे वे बड़े भले लगे। मानो चाँद के कैनवास पर किसी ने चित्र बनाए हों। चाँद अगर सपाट होता, तो इतना मोहक न लगता। नहीं, ये उसके कलंक नहीं, उसके गुदने हैं।

मैं नदी किनारे स्केच कर रहा था। इतने में एक कृशकाय स्त्री नहाने आई। नहाकर उसने पहनने के लिए साड़ी निकाली। वह उसे एक छोर से दूसरे छोर तक दो बार देख गई, लेकिन साड़ी इतनी तार-तार हो चुकी थी कि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसे कहाँ से पहने। किसी तरह उसने अपनी लज्जा ढाँकी और चली गई।

यह था कलंक। मेरा सिर लज्जा से झुक गया। मुझसे और स्केच नहीं किए गए।

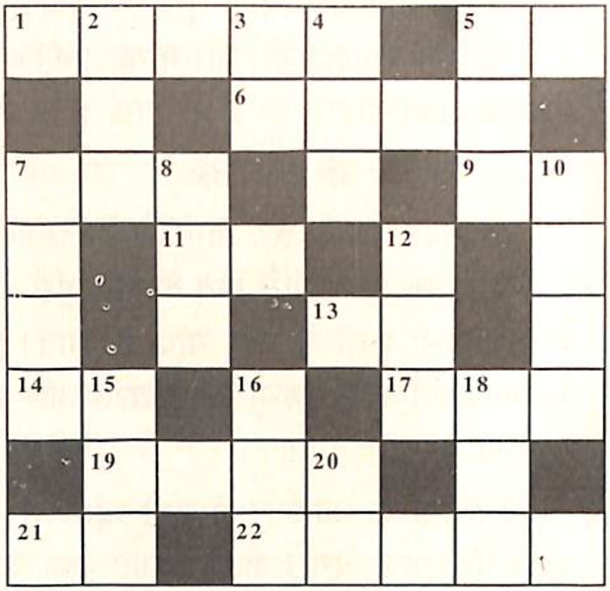
भोर वेला में नर्मदा का पानी सिंदूरी हो गया है। जहाँ धूप नहीं पड़ रही है, वहाँ कहीं नीला, कहीं बैंगनी तो कहीं हरा है। दूर भूरा है।

※ ※ ※

मीठे पानी का श्रेष्ठ और सुदीर्घ स्रोत है नदी। हज़ारों वर्षों से मनुष्य उसकी ओर खिंचता चला आया है। केवल इसलिए नहीं कि वह हमारी और हमारे खेतों की प्यास बुझाती है, बल्कि इसलिए भी कि वह हमारी आत्मा को भी तृप्त करती है। उसके तट पर हमारी आत्मा पल्लवित-पुष्पित होती है - संस्कृति का जन्म होता है। संसार की सभी प्रमुख संस्कृतियों का जन्म नदियों की कोख से हुआ है। ●

बाएँ से दाएँ

चित्र-पहेली



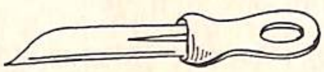
1



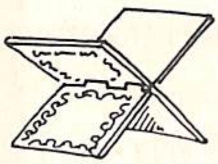
5



6



7

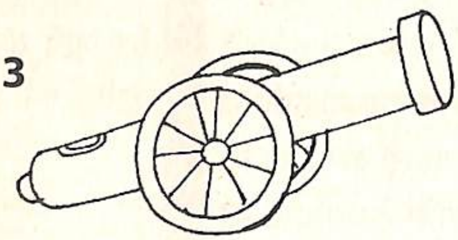


9 जो बीत भी गया,
जो आने वाला भी है

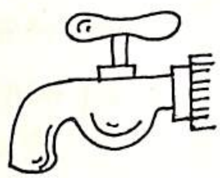
11



13



14

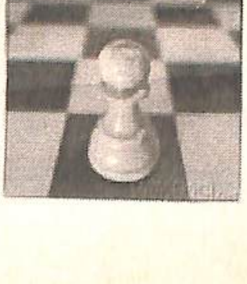


17 'रकम' में है शरीर का एक अंग

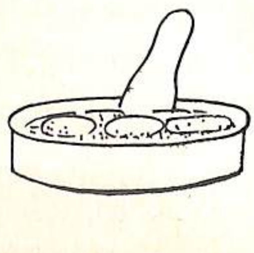
19



21



22

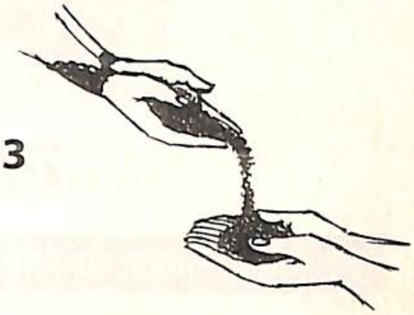


ऊपर से नीचे

2



3

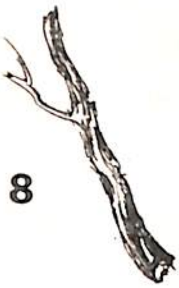


4 सूरज बिखेरता है....

5 मिठाई पर चढ़ने वाली चमकीली परत

7 मुस्लिमों का एक पवित्र महीना

8



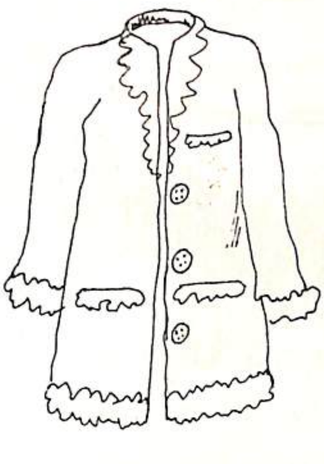
10



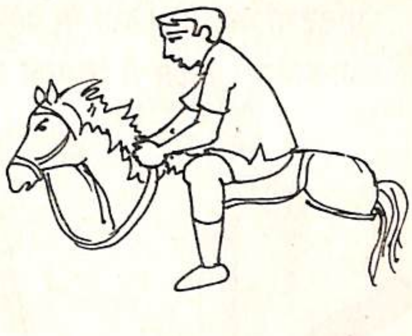
12



15



16



18

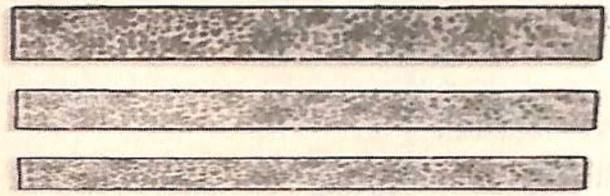


20 'सनक' में है रग का पर्यायवाची

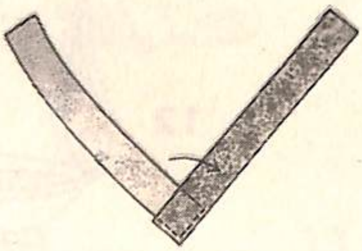
तुम भी बनाओ

लहराता हुआ साँप

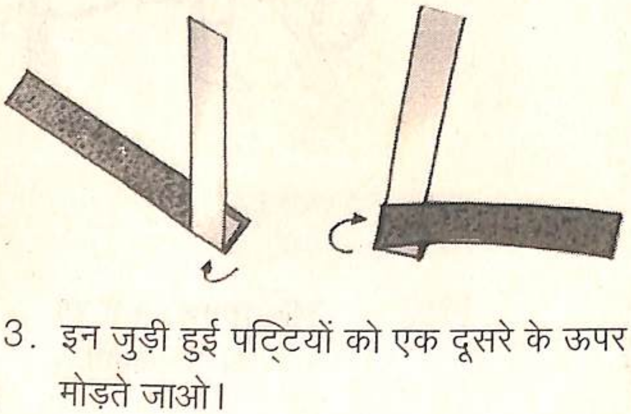
तुम्हें चाहिए - काला या रंगीन कागज़, पुरानी पेंसिल या लकड़ी, कैंची, गोंद, धागा या पतली रस्सी



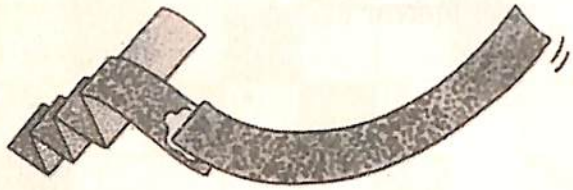
1. रंगीन या काले कागज़ को काटकर करीब 5 से.मी. चौड़ी और कुछ 4 से.मी. व 3 से.मी. चौड़ी पट्टियाँ अलग कर लो।



2. कटी हुई पट्टियों में से 5 से.मी. चौड़ी दो पट्टियों को 90 डिग्री के कोण पर या त्रिकोण आकार में आपस में चिपका दो।

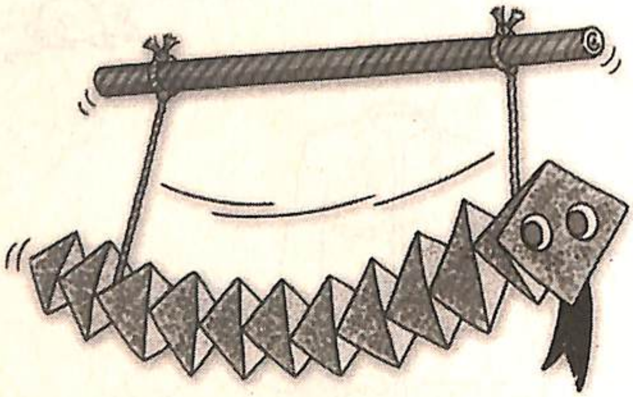


3. इन जुड़ी हुई पट्टियों को एक दूसरे के ऊपर मोड़ते जाओ।



4. पट्टी खत्म हो जाने पर दोनों पट्टियों की किनार पर गोंद से कटी हुई पट्टियाँ चिपकाते जाओ।

5. दोनों ओर पीछे जोड़ी जाने वाली पट्टियों की चौड़ाई 4 से.मी. व 3 से.मी. कर दो ताकि पीछे की ओर साँप की पूँछ बनती चली जाए।

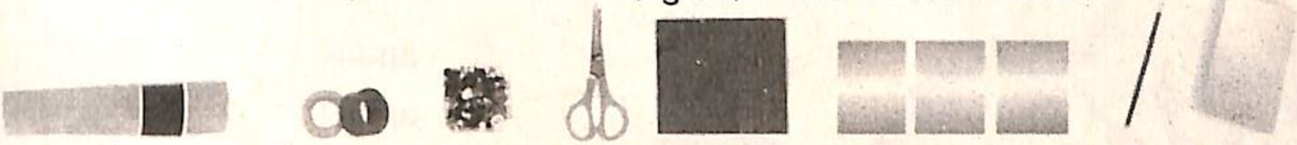


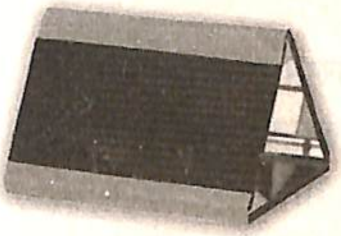
6. रंगीन स्केच या मोम-चॉक से साँप की दो आँखें बनाओ और एक जीभ काटकर चिपका दो।

अब साँप के दोनों किनारों पर छेद बनाकर उसमें धागा या पतली रस्सी पिरो दो। धागे के इन दोनों छोरों को लकड़ी या पैंसिल के दोनों छोरों से बाँध दो।

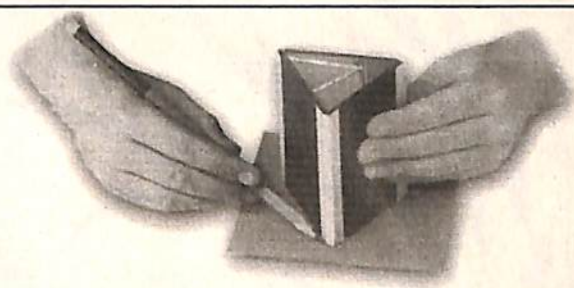
कैलाईडस्कोप बनाओ

कैलाईडस्कोप बनाने के लिए तुम्हें इन चीज़ों की ज़रूरत होगी -

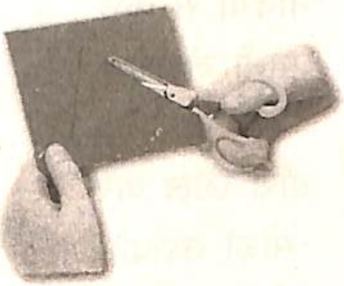




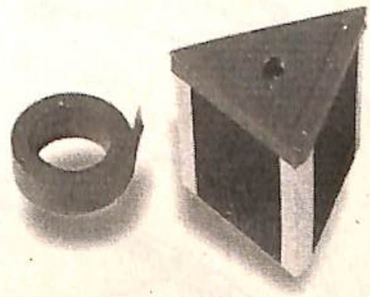
तीनों काँचों को आपस में मिलाकर टेप से इस तरह जोड़ो कि एक तिकोना आकार बन जाए।



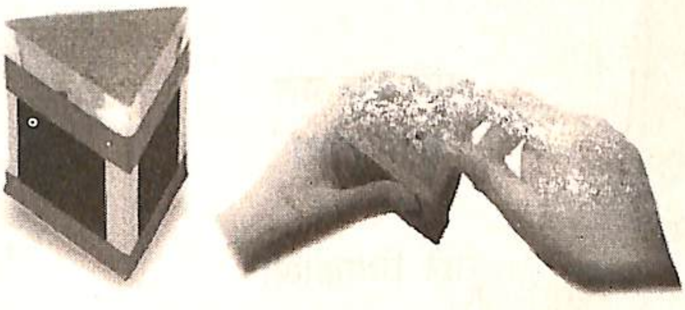
इस त्रिकोण आकृति को कार्ड पर रखकर पैंसिल से यह आकृति रेखांकित करो।



कार्ड से रेखांकित त्रिकोण आकृति को कैंची से काट लो। उसके बीचोंबीच छेद बनाओ।



कार्ड से काटे गए इस त्रिकोण को काँच की बनी आकृति के एक छोर पर टेप से चिपका दो।



अब काँच की बनी त्रिकोण आकृति के दूसरे छोर पर टेप से ट्रेसिंग पेपर चिपका दो। और दूसरी ओर बने छेद से कुछ मोती या कंचे कैलाईडस्कोप के भीतर डालो।



टॉर्च से ट्रेसिंग पेपर पर रोशनी डालते हुए छेद से कैलाईडस्कोप के भीतर झाँको। कैलाईडस्कोप को धीरे-धीरे घुमाते जाओ। कई मज़ेदार आकृतियाँ तुम्हें बनती-बिगड़ती दिखाई देंगी।

पतंग

राजेश जोशी

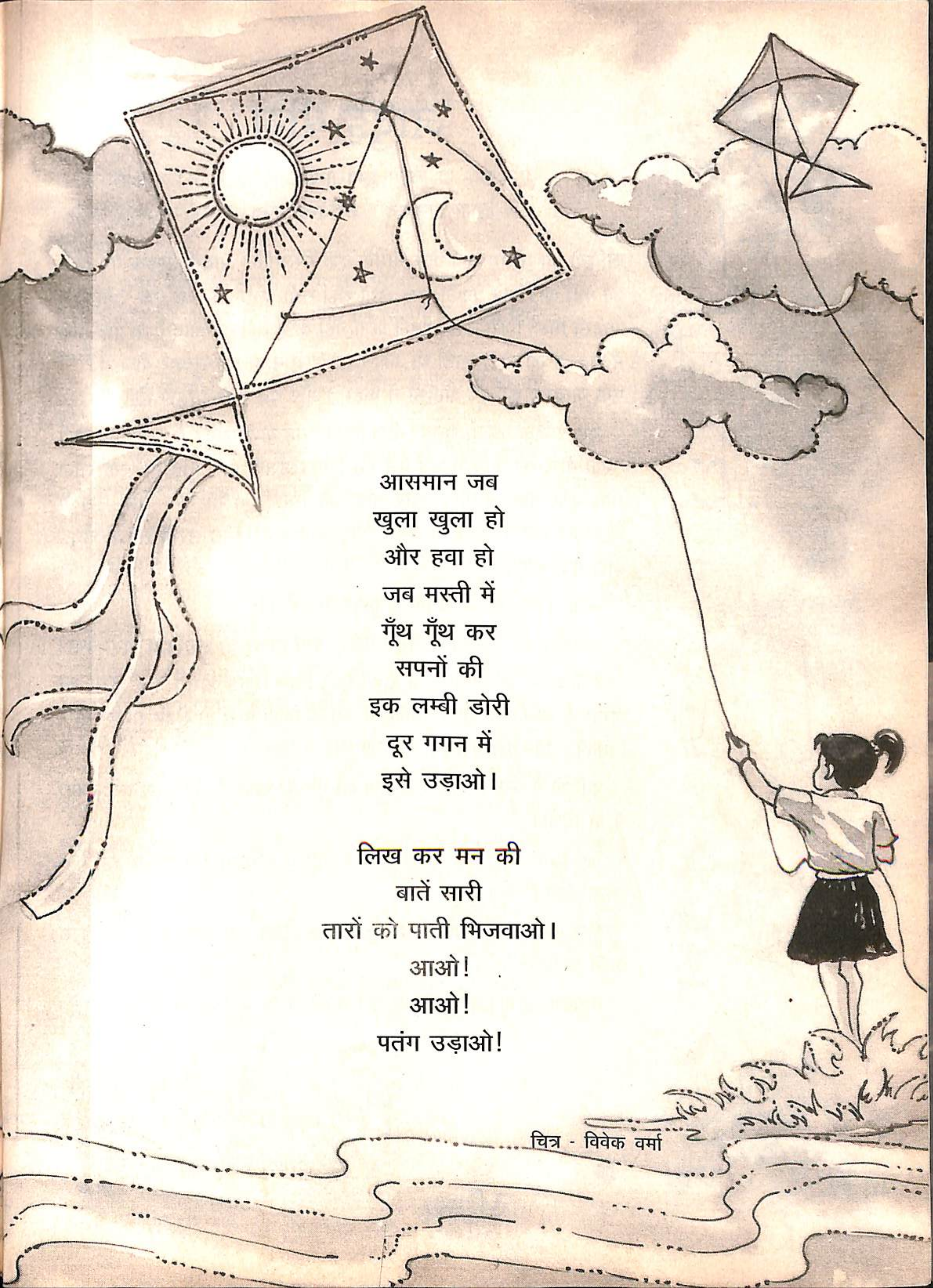


आओ!
आओ!
पतंग बनाओ

आसमान से ले लो
थोड़ा कागज़ नीला
बाँस वनों से
ठड्डे और कमानी ले लो
आटा थोड़ा माँ दे देगी
नदियों से कुछ
पानी ले लो।

बाँस छील कर
मोड़ो उसको
लेई लगाकर
जोड़ो सबको।

दाएँ रख कर
सूरज चंदा
बाएँ पर
तारे चिपकाओ



चित्र - विवेक वर्मा

आसमान जब
खुला खुला हो
और हवा हो
जब मस्ती में
गूँथ गूँथ कर
सपनों की
इक लम्बी डोरी
दूर गगन में
इसे उड़ाओ।

लिख कर मन की
बातें सारी
तारों को पाती भिजवाओ।
आओ!
आओ!
पतंग उड़ाओ!

जादुई बीज

मित्सुमासा ऐनो
अनुवाद - अरविन्द गुप्ता





सर्दियों का मौसम था। जैक नामक एक मस्तमौला आदमी सड़क पर चला जा रहा था। उसे काफी भूख लगी थी। तभी अचानक उसे एक ऐसा बूढ़ा आदमी मिला जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। बूढ़े आदमी के एक हाथ में लकड़ी की मोटी लाठी थी और दूसरे हाथ में दो बड़े सुनहरे बीज थे। "मैं एक जादूगर हूँ" बूढ़े आदमी ने कहा, "और यह बीज तुम्हारे लिए है...।"

बूढ़े ने जैक को दो सुनहरे बीज दिए। "यह बीज जादुई हैं," उसने कहा। "एक बीज को आग में भून कर खा लेना। उसके बाद तुम्हें पूरे एक साल तक भूख नहीं लगेगी। दूसरे बीज को मिट्टी में बो देना और उसकी हिफाज़त करना। वो बीज उगेगा और पतझड़ के समय उसमें से दो जादुई बीज पैदा होंगे।"

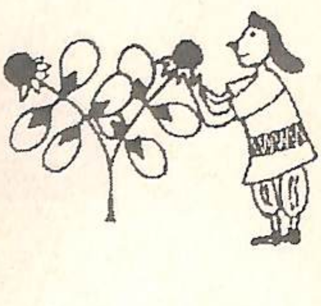


जैक ने जादूगर के बताए अनुसार ही किया।

अगले बसंत में बीज से अंकुर फूटा। बड़ा होकर वो एक बड़ा पौधा बना।

गर्मियों में उस पौधे में दो सुंदर फूल खिले। कुछ समय बाद फूलों की जगह दो फल उग आए। पतझड़ में उन दो फलों में से दो सुंदर सुनहरे बीज निकले - बिल्कुल वैसे ही जैसे जादूगर ने दिए थे।

सर्दियों में जैक ने फिर एक बीज को भूनकर खाया। और दूसरे को ज़मीन में बो दिया।

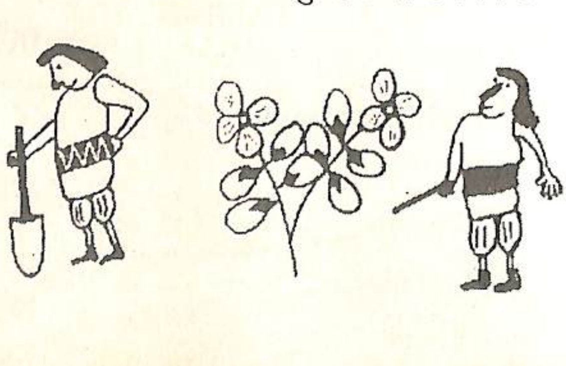


पहले की तरह फिर बसंत आया। जहाँ जैक ने बीज बोया था वहाँ एक छोटा पौधा निकल आया।

फिर गर्मी आई। पौधे में दो सुंदर फूल खिले, जो बाद में दो खूबसूरत फलों में बदल गए।

पतझड़ आया। और दुबारा उन फलों में से दो सुनहरे बीज निकले।





सर्दियों में जैक ने फिर एक बीज को भूनकर खाया और दूसरे को ज़मीन में बो दिया।



उसके अगले साल भी एक पौधा उगा, उसमें दो फूल लगे, जो दो सुंदर फलों में बदले और उनसे दो सुनहरे जादुई बीज पैदा हुए।

इस सबने जैक को सोचने पर मजबूर किया। 'हर साल वही बात हो रही है। आखिर इस तरह कब तक चलेगा?' उसने खुद से पूछा।



इस साल में कोई बीज नहीं खाऊँगा और दोनों बीजों को बो दूँगा।

जाड़े के मौसम में जैक ने दोनों बीजों को बो दिया। उसने काफी मेहनत से उनकी देखभाल की।

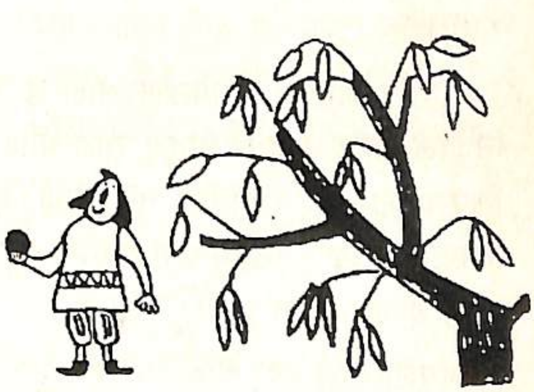
फिर अगला साल आया - यह पहला साल था जब उसने दोनों बीजों को एक साथ बोया था। तुम्हारे ख्याल से उस साल क्या हुआ?



बसंत में दो पौधे निकले जिनसे पतझड़ में चार बीज पैदा हुए।

सर्दियों में जैक ने एक बीज खाया और बाकी तीन को ज़मीन में बो दिया। दूसरे साल बसंत में तीन पौधे उगे, जिनसे पतझड़ में छह बीज निकले।

सर्दी के मौसम में जैक ने एक बीज खाया और बाकी पाँच बीज बो दिए। कौए और गौरैये बीज न खाएँ - उन्हें भगाने के लिए जैक ने एक शोर मचाने वाली जुगाड़ भी बनाई। तेज़ हवा चलने पर इस जुगाड़ की आवाज़ से चिड़िया घबरा जातीं।



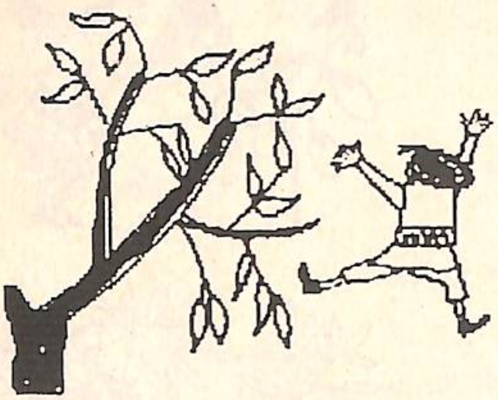
उसके कुछ अगले सालों तक उसने यही क्रम दोहराया।

छठे साल इतने पौधे उगे कि जैक ने उन्हें गिनने की कोशिश भी नहीं की। जब वो बीजों की फसल को इकट्ठा कर रहा था तब एक भली नौजवान युवती वहाँ आई। उसका नाम एलिस था। वो जैक की मदद के लिए वहाँ रुक गई।



जैक और एलिस ने एक-एक बीज भूनकर खाया। फिर उन्होंने बाकी बीजों को बो दिया।

सर्दियों में जैक और एलिस ने शादी की और उसके लिए



दावत भी दी। उपहार स्वरूप उन्होंने पाँच मेहमानों को दो-दो सुनहरे जादुई बीज दिए। सभी मेहमानों ने खुशी के इस दिन की याद में एक बीज को बचाकर रखा। जैक और एलिस ने एक-एक बीज खाया। उस साल उन्होंने एक छोटी कोठरी भी बनाई और उसमें सोलह बीजों को सँभाल कर रख दिया। बाकी बीजों को उन्होंने बो दिया।

आठवें साल बहुत से बीज अंकुरित हुए और उनमें से बहुत सारे बीज निकले। अब क्योंकि उनके पास बहुत सारे बीज हो गए थे इसलिए उन्होंने कुछ बीजों को बाज़ार में बेचने की बात सोची।

उन्होंने कोठरी से पिछले साल के बीजों को निकाला और कुल मिलाकर साठ बीज बेचने के लिए बाज़ार गए। चौंतीस नए बीजों को उन्होंने कोठरी में रखा। उन्होंने एक-एक बीज खाया और बाकी बीजों को बो दिया।

अगला साल नवाँ साल था जब जैक ने बीज न खाकर दोनों बीजों को बोया था।

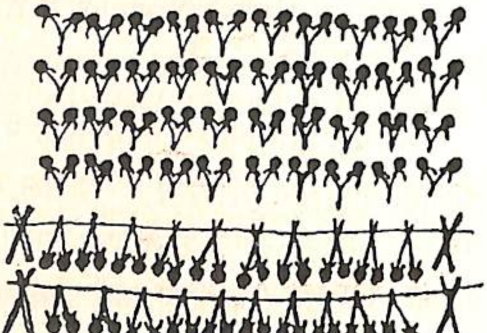
बसंत में बहुत-से अंकुर निकले जिनसे पतझड़ में बहुत से बीज बने। उस वर्ष उनके एक बच्चे का जन्म हुआ।

जाड़ों में उन्होंने कुल मिलकर तीन बीज खाए - क्योंकि हरेक ने एक-एक बीज खाया। अब उनके पास बीजों का बहुत स्टॉक हो गया था इसलिए उन्होंने गोदाम के बीज भी निकाले और कुल मिलाकर सौ बीजों को बेचने के लिए बाज़ार गए। उन्होंने नई फसल के इक्यावन बीजों को कोठरी में रखा और बाकी बचे बीजों को बो दिया।

उन्होंने कितने बीज बोए?

अगला साल दसवाँ साल था। क्योंकि बच्चा बड़ा हो रहा था इसलिए जैक और एलिस ने एक नया और बड़ा घर बनाया। पतझड़ में उनका खेत जादुई बीज देने वाले पौधों से भर गया। जल्द ही नई फसल को काटने का समय आने वाला था। परंतु अचानक, हे भगवान, जैक ने कहा, देखो कितनी तेज हवा चलने लगी है!

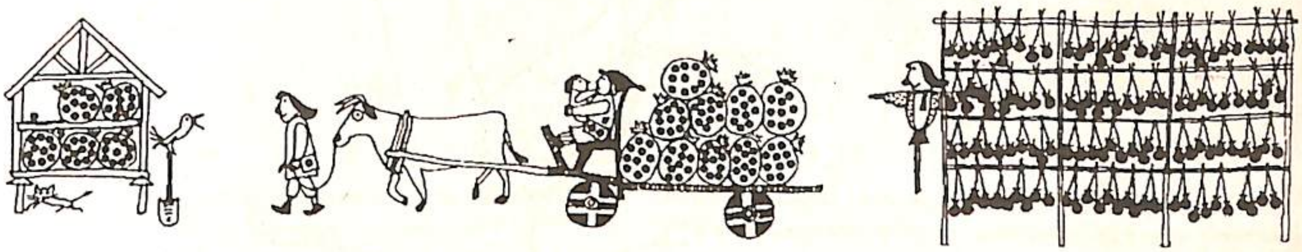
फिर एक भीषण तूफान आया! तूफान इतना भयानक होगा इसकी उन्हें बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। फिर नदी में बाढ़ आई और पानी तेज़ी से







आबादी वाले इलाके में फैलने लगा। घर को पानी में बहने से रोकने के लिए जैक ने उसे एक पेड़ से बाँध दिया। फिर उसने अपनी गाय को लकड़ी की गाड़ी से ऊपर खींच लिया। गाड़ी अब पानी में नाव जैसे तैर रही थी। पानी से बचने के लिए एलिस बच्चे के साथ घर की छत पर दौड़कर गई।



जैक बड़ी मुश्किल से बीजों की एक छोटी थैली को बचा पाया। उसने थैली को पेड़ से लटका दिया। तूफान बेहद भयानक था!

तेज़ हवा के झोंकों में बड़े-बड़े पेड़ भी पत्तों की तरह काँप रहे थे। धुँआधार बारिश हो रही थी। कुछ ही देर में पूरा खेत एक विशाल समुद्र में बदल गया। रात के अँधेरे में हवा चिल्लाती रही और पानी के थपेड़े पौधों को रौंदते रहे। तूफान से फसल और कोठरी का पूरी तरह खात्मा हो गया।

कुछ दिनों बाद तूफान खत्म हुआ। फिर आसमान साफ हुआ और सूरज दुबारा से चमका।

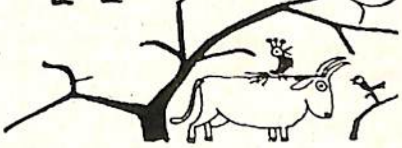
"भगवान का लाख शुक्र है कि हमारा बच्चा तो सुरक्षित है," एलिस ने कहा।

"मैं भी काफी खुश हूँ," जैक ने कहा।

"कम-से कम तूफान में हमारा लड़का तो बच गया। हम लोग अपनी मेहनत से दस बीज भी बचा पाए। यह गम का नहीं खुशी का मौका है। हम अब दुबारा से नई ज़िंदगी शुरू करेंगे।"

जैक ने तीन बीज भूने। उसने एक बीज खुद खाया। उसने एलिस और अपने लड़के को भी एक-एक बीज दिया। बाकी बीजों को उसने ज़मीन में बो दिया। फिर जैक और उसकी पत्नी दोनों ने सिर झुकाकर अच्छी फसल के लिए प्रार्थना की। ●

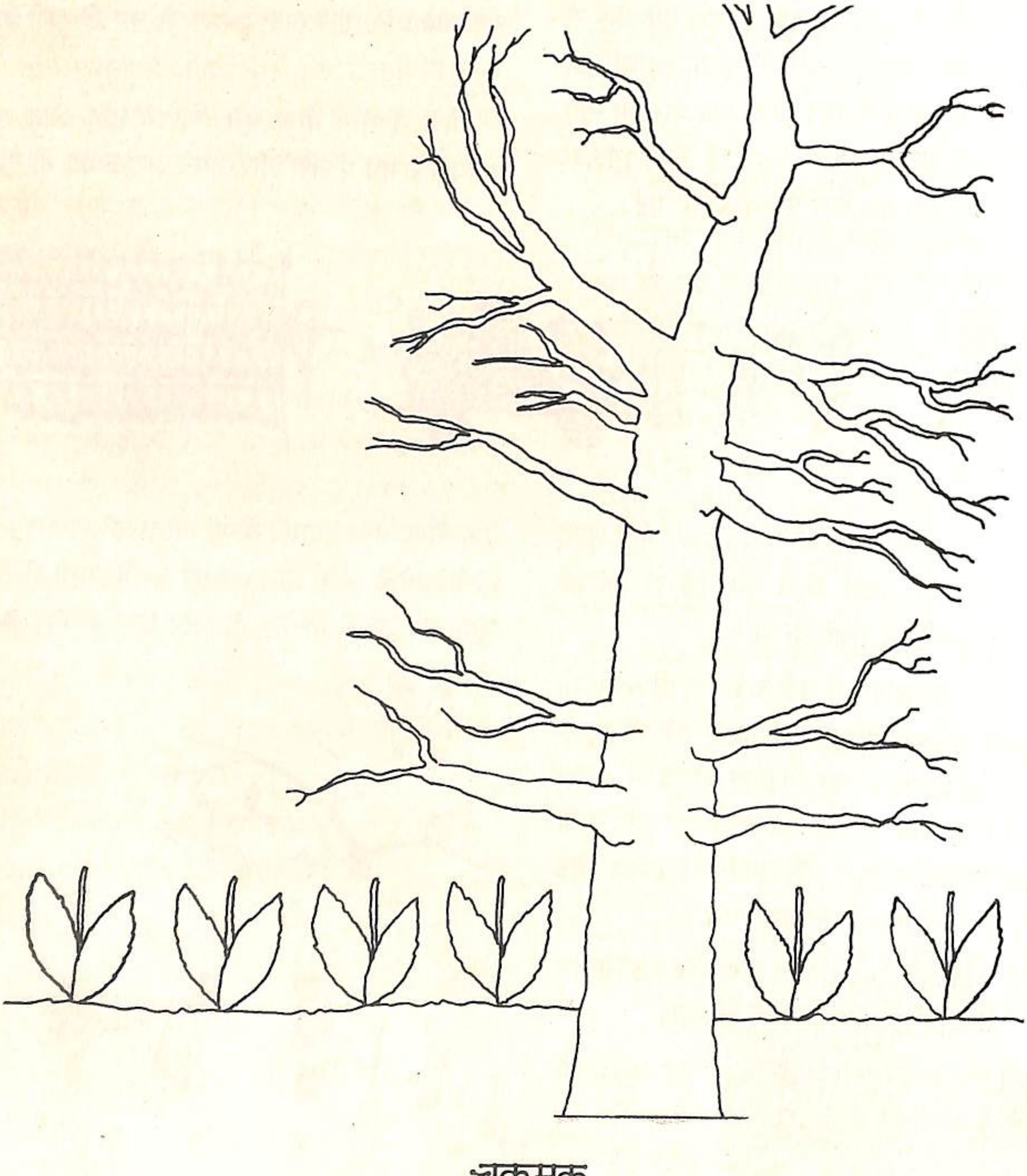






पेड़ बनाओ

यह एक सूखा पेड़ है। हाँ पर तुम चाहो तो इसे हरा कर सकते हो। इसमें पत्तियाँ उगा सकते हो। फूल लगा सकते हो। इसके आसपास घास, झाड़ियाँ जो चाहो बना सकते हो। क्या इस पेड़ पर चिड़ियाँ आती हैं? हो सकता है इस पेड़ पर उनके घोंसले भी हों। घोंसलों में उनके बच्चे हों। मकड़ी, कीड़ें पेड़ पर एक पूरी दुनिया होती है। तो उठाओ कूची और इस पेड़ पर जो-जो तुम्हें बनाना हो बना दो। हाँ पर हमें भेजना मत भूलना। हम बढ़िया चित्रों को चकमक के अगले अंक में रंगीन पन्नों पर छापेंगे।



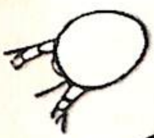


एक मज़ेदार खेल



1 से 63 तक की कोई भी संख्या सोचो।

हम बता सकते हैं कि तुमने कौन-सी संख्या सोची है। बस तुम्हें इतना बताना पड़ेगा कि इन छह खानों में से किस-किस खाने में तुम्हारी सोची गई संख्या है।





क्या ऐसा संभव है? ज़रा आज़माकर देखो। सुराग तो हम बता देते हैं। यह संख्या पता करने के लिए तुम्हें बस इतना करना है कि जिन-जिन खानों में वह संख्या है उन खानों की पहली संख्या को जोड़ लो। बस वही तुम्हारे द्वारा सोची गई संख्या होगी। ऐसा क्यों होता है? इसके बारे में पढ़ो अगले अंक में।

1	13	25	37	49	61
3	15	27	39	51	63
5	17	29	41	53	
7	19	31	43	55	
9	21	33	45	57	
11	23	35	47	59	

2	14	26	38	50	62
3	15	27	39	51	63
6	18	30	42	54	
7	19	31	43	55	
10	22	34	46	58	
11	23	35	47	59	

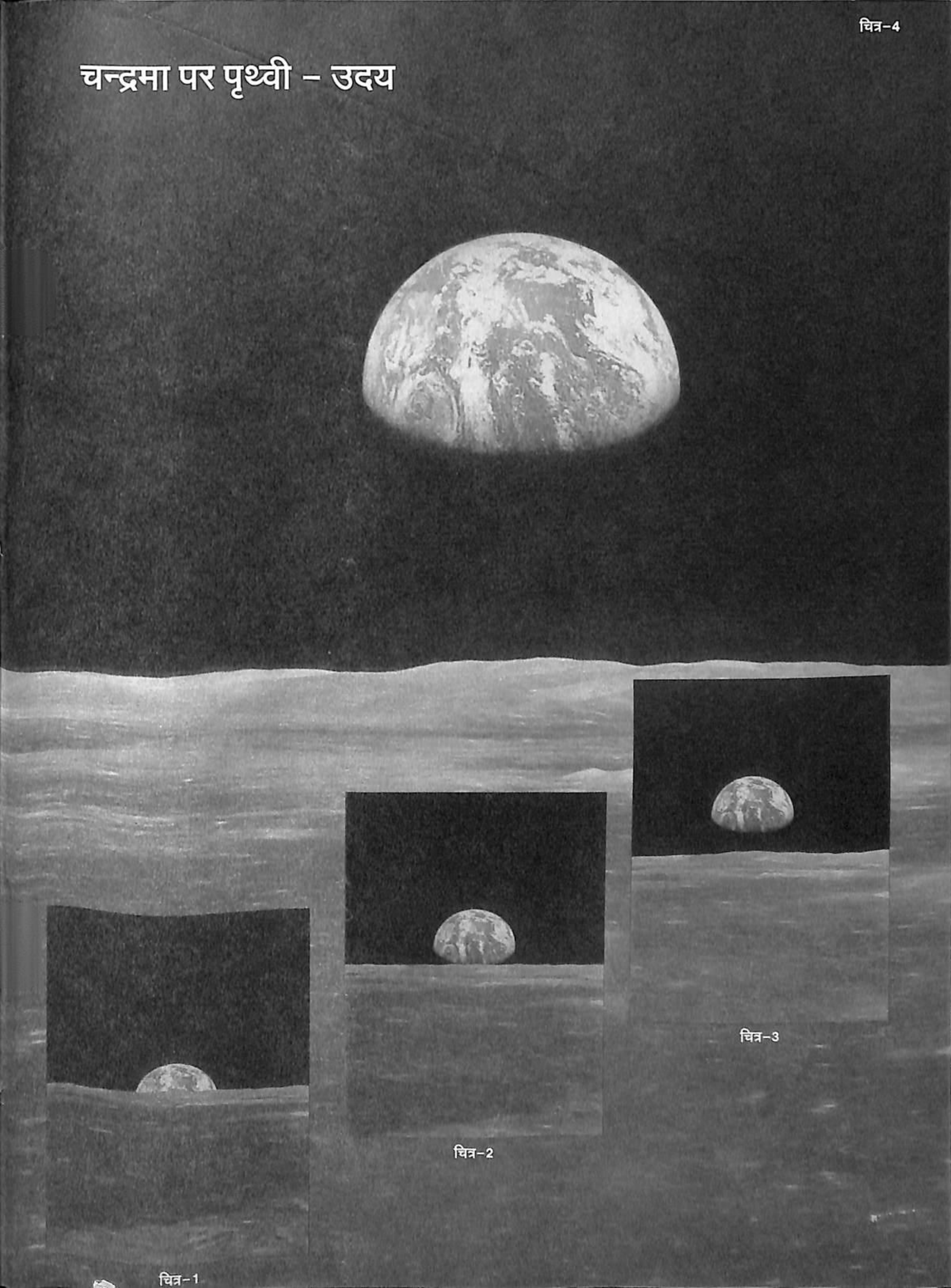
4	14	28	38	52	62
5	15	29	39	53	63
6	20	30	44	54	
7	21	31	45	55	
12	22	36	46	60	
13	23	37	47	61	

8	14	28	42	56	62
9	15	29	34	57	63
10	24	30	44	58	
11	25	31	45	59	
12	26	40	46	60	
13	27	41	47	61	

16	22	28	50	56	62
17	23	29	51	57	63
18	24	30	52	58	
19	25	31	53	59	
20	26	48	54	60	
21	27	49	55	61	

32	38	44	50	56	62
33	39	45	51	57	63
34	40	46	52	58	
35	41	47	53	59	
36	42	48	54	60	
37	43	49	55	61	

चन्द्रमा पर पृथ्वी - उदय



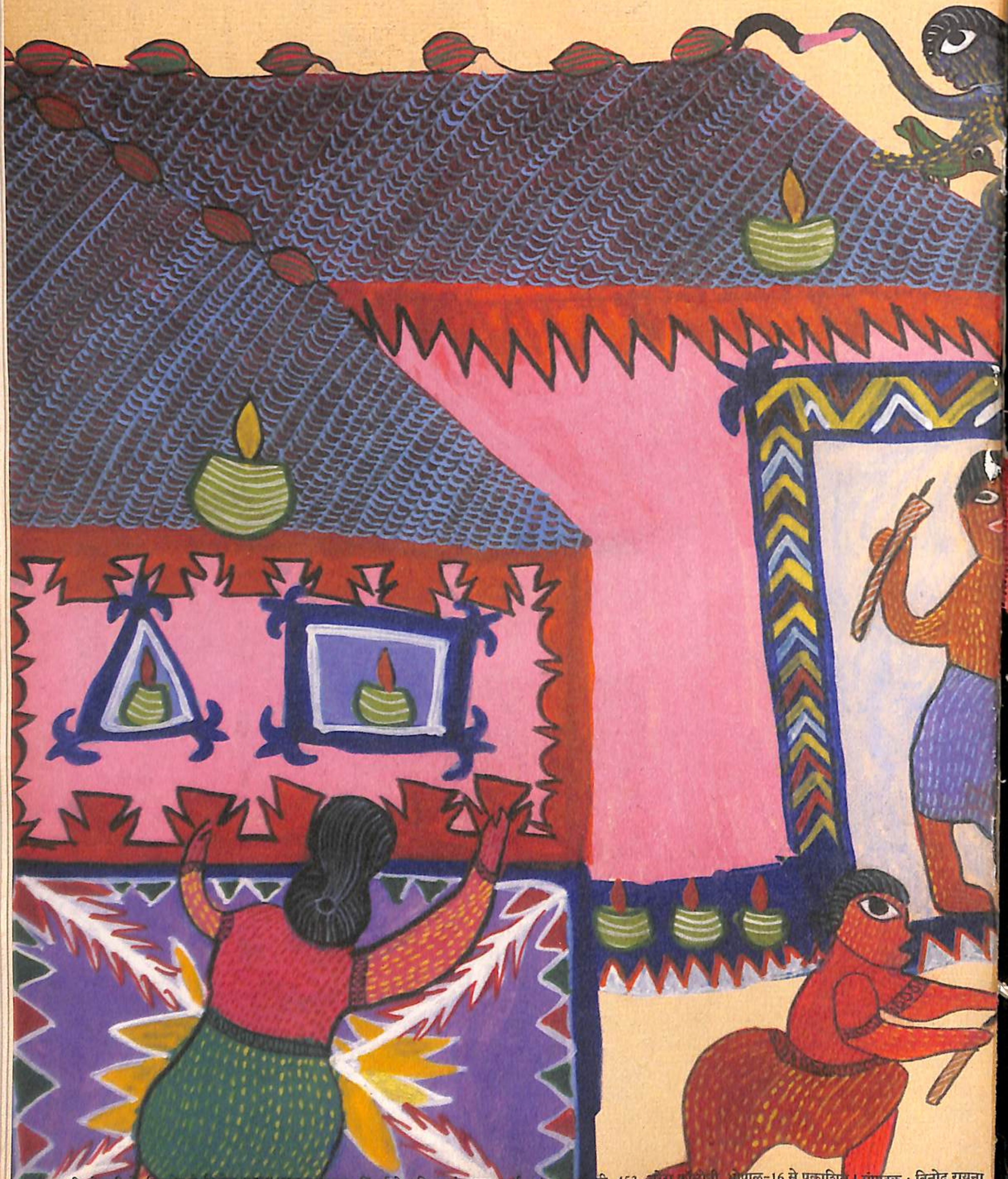
चित्र-4

चित्र-3

चित्र-2

चित्र-1

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05



रक्स डी. [illegible] की ओर से [illegible] द्वारा [illegible] प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/[illegible] जी. 453, [illegible] कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना